Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

إِنْ تُبْدُوْا خَيْرًا اَوْ تُخْفُوْهُ اَوْ تَعْفُوْا عَنْ سُوْٓءٍ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَفُوًّا قَدِيْرًا

(सूरत अन्निसा आयत :150)

अनुवाद: यदि तुम कोई नेकी ज़ाहिर करो या उसे छुपाए रखो या किसी बुराई से चश्मपोशी करो तो निसन्देह अल्लाह तआला बहुत क्षमा करने वाला (और) बहुत शक्तिशाली है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष- 6
अंक- 7

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

5 रजब 1442 हिज्री कमरी 18 तब्लीग़ 1400 हिज्री शम्सी 18 फरवरी 2021 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नसीहतें

यात्रा करते हुए जमा, देरी

(1091) हज़रत अब्दुल्लाह बिन उम्र रज़ी अल्लाह अन्हु से रिवायत है कि : मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को देखा कि जब यात्रा में आप को जल्दी चलना होता तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मग़रिब की नमाज़ में देरी करते और मग़रिब और ईशा एक साथ पढ़ते। सालिम ने कहा कि हज़रत अब्दुल्लाह (बिन अमर रज़ियल्लाहु अन्हु)भी ऐसा ही किया करते थे, जब उन्हें जल्दी यात्रा करनी होती।

सवारी पर नफ़ल नमाज़ पढ़ना

(1093) हज़रत आमिर बिन रबीया रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि उन्होंने नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को देखा,आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम आपनी ऊंटनी पर उधर ही मुँह किए हुए नमाज़ पढ़ रहे थे जिधर वह आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को लिए जा रही आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़र्ज़ नमाज़ के लिए सवारी से उतर जाते।

(1097) हज़रत आमिर बिन रबीया रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को देखा। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम आपनी ऊंटनी पर नफ़ल पढ़ रहे थे। (रुकवा और सजदा) अपने सिर के इशारे से करते। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का मुँह उसी तरफ़ होता जिधर उस का मुँह होता और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़र्ज़ नमाज़ में ऐसा नहीं करते।

(बुख़ारी, भाग 2 किताब तक़सीरुस्सलात, प्रकाशन क़ादियान 2006)

इस्लाम जो संसार से दुराचार तथा बुराइयों को दूर करना चाहता है आज्ञा देता है कि ऐसी आवश्यकताओं की दृष्टि से एक से अधिक पत्नियां करे। इस्लामी शरीयत ने उन बातों को लिया है जो प्राकृतिक रूप से इन्सान के लिए अभीष्ट हैं।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

25 अगस्त 1898 ई वर्तमान फ़ारसी

"अगस्त की सुबह को फ़ारसी भाषा पर वार्तालाप करते हुए मौलाना मौलवी अब्दुल करीम साहिब स्याल-कोटी ने फ़रमाया कि "ईरानियों ने आजकल अपना ध्यान पुस्तक रचना की तरफ बहुत किया हुआ है और इतनी प्र-चुरता से अरबी शब्दों को प्रयोग करते हैं सम्बन्धों के बिना फ़ारसी भाषा का कम प्रयोग करते हैं और बाब मुफ़अलह, इनफआल इस्तेफआल इत्यादि को इतनी प्रचुरता से प्रयोग करते हैं कि अक़ल हैरान होती है।"

इस पर हज़रत अक़दस ने फ़रमाया कि "फ़हमीदन इत्यादि पुराने ज़माना में प्रयोग करते थे। आजकल बहुत कम प्रयोग रह गया है।"

मौलाना अब्दुल करीम साहिब ने निवेदन किया कि "आजकल तो मुफ़ाहमा, तफ़हीम इत्यादि ही बोलते हैं।"

अरबी भाषा की व्यापकता और इस्लाम का समर्थन

इसके बाद इसी क्रम में हज़रत ने फ़रमाया कि''अरबी भाषा बहुत व्यापक है और हर किस्म की इस्तेलाहें इस में मौजूद हैं और रचनाएं इतनी अधिक प्रचुरता से हो रही हैं कि जिनका ज्ञान ख़ुदा के अतिरिक्त और किसी को नहीं हो सकता। केवल हदीस ही को देखो कि कोई कामिल तौर पर दावा नहीं कर सकता कि उसने इल्मे हदीस की समस्त पुस्तकों को देखा हो।"

फिर मौलाना मौलवी अब्दुल करीम साहिब ने इसी क्रम में फ़रमाया कि "हाल ही में मौलवी साहब (जनाब नूरुद्दीन साहिब सल्लमहो रब्बुहो अभिप्राय हैं) के पास मिस्र से कुतुब ख़ाना ख़दयोविया की एक सूचि सात भागों में आई है। वह सूचि ऐसे तौर पर क्रमबद्ध की गई है कि इस को पढ़ कर भी एक मज़ा आता है। ऐसे ढंग पर किताबों के नम्बर दिए हैं कि एक बिल्कुल अजनबी भी यदि लाइब्रेरी में चला जाए तो वह बिना किसी कष्ट के ठीक किताब पर हाथ डालेगा; बशर्ति के उसने सूचि को एक बार देखा हो।"

इस पर हज़रत अक़दस ने पूछा कि "वे किताबें बाहर जा सकती हैं?"

"मौलवी साहिब महोदय ने फ़रमाया।" हाँ वे लाइब्रेरियां ऐसी नहीं। किताबें नक़ल हो सकतीं हैं। इत्यादि इत्यादि।"

इस पर जनाब इमाम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि

"ख़ुदा तआला ने इस्लाम का कितना समर्थन किया है। यदि कोई अज्ञान इस्लाम से अल्लाह के समर्थन का इन्कार करता है तो उसे मानना पड़ेगा।

शेष पृष्ठ 11 पर

मुस्लमानों ने एक वक़्त अपनी औलादों की तर्बीयत के फ़र्ज़ से आलस्य किया या उन्होंने शादीयों में सावधानी से काम नहीं लिया और ऐसी औरतों को अपने घरों में लाए जो इस्लामी तर्बीयत की योग्यता नहीं रखती थीं। और वह महान इमारत जो सहाबा रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के हाथों तैयार हुई थी अपनी बुनियादों पर गिर गई

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ثُمَّ جَعَلْنٰكُمْ خَلٰٓئِفَ فِي الْاَرْضِ مِنْۢ بَعْدِهِمْ لِنَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُوْنَ सूरत यूनुस, आयत 15 की तफ़सीर में फ़रमाते हैं :-

अमल दो प्रकार के होते हैं। एक वह अमल जो इन्सान को नेअमत का हक़दार बनाते हैं। और दूसरे वे अमल जो नेअमत के मिलने के बाद इसको क़ायम रखने के लिए करने ज़रूरी होते हैं। कई विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करते समय होशयार होते हैं परन्तु जब ज़िंदगी की दौड़ धूप में पड़ते हैं तो बिल्कुल निकम्मे साबित होते हैं। यही क़ौमों का हाल होता है। कुछ कौमें शान-ओ-शौकत के मिलने से पहले बहुत अच्छा उदाहरण दिखाती हैं परन्तु जब हुकूमत मिल जाती है तो नेकी के मयार को क़ायम रखना उन के लिए मुश्किल हो जाता है।

दूसरे इस जुमला को इस लिए भी बढ़ाया गया है कि इन्सानी आमाल दो किस्म के होते हैं। एक स्वयं पवित्र कर्म और एक वह कर्म जो पवित्र कर्मों को क़ायम रखे। अत: इस जुमले को बढ़ाने का यह भी अर्थ है कि तुम्हारी ज़ाती नेकियों की वजह से हमने तुम को पृथ्वी का खलिफ़ा बनाया था। इसके बाद हम यह देखना चाहते थे कि तुम इन कर्मों को किस तरह बजा लाते हो जो नेकी के संरक्षक होते हैं। सच्चाई यही है कि पवित्र कर्मों से बहुत ज़्यादा कठिन वे कर्म होते हैं जो नेकी को क़ायम रखने वाले होते हैं। क़ौमों की तबाही का करण ही यह होता है कि वे तरक़्क़ी के लिए तो

शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ की यूरोप की यात्रा, मई जून 2015 ई (भाग-3)

सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ का अख़बार DIE ZEIT को इंटरव्यू

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: सय्यद मुहयुद्दीन फ़रीद)

25 मई सोमवार के दिन 2015 ई (शेष.....)

अख़बार DIE ZEIT को हुज़ूर अनवर का इंटरव्यू(शेष.....)

जर्नलिस्ट ने प्रश्न किया "कुछ समय से दुनिया Boko Haram और ISIS की ख़िलाफ़त के बारे में सुन रही हैं परन्तु ख़िलाफ़त अहमदिया और उन दूसरी ख़िलाफ़तों के बारे में जो कि जर्मन सुनते हैं क्या अंतर है?"

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि

जहां तक ख़िलाफ़त का सम्बन्ध है, यह तो नई ख़िलाफ़त नहीं। Boko Haram वाले claim करते हैं कि हम ख़लीफ़ा हैं, ISIS वाले यह claim करते हैं कि हम इस्लाम के ख़लीफ़ा हैं। सऊदी बादशाह यह कहे या न कहे उसके दिल में यही है कि मैं ख़लीफ़ा हूँ। मराक़श (Moroco) में जो बादशाह है वह ख़लीफ़ा ही कहलाता है, उस को ख़लीफ़ा समझते हैं। फिर इस से पूर्व जब तक इस्लाम का ज़वाल नहीं हुआ, downfall नहीं हुआ, उस समय तक सलूतनत-ए-उस्मानिया में भी एक ख़िलाफ़त चल रही थी। उस समय हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया था कि अब कोई ख़िलाफ़त नहीं, अब मैं आ गया हूँ और कुछ वर्ष बाद ही उनकी यह ख़िलाफ़त ख़त्म हो गई।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला ने फ़रमाया कि बात यह है कि किसी भी काम को करने के सिद्धांत होते हैं। हम कहते हैं कि इस्लाम तो बड़ी हिक्मत की शिक्षा देने वाला धर्म है और जब हिक्मत की शिक्षा देता है तो फिर ऐसी कोई बात नहीं होनी चाहिए जो हिक्मत के अनुसार न हो। अब कोई भी हुकूमत क़ायम करनी हो, तो यह कभी नहीं होता कि एक दम आप खड़े हों और ऐलान कर दें कि मैं बादशाह हूँ और सब आपके पीछे हो जाएं या चले जाएं। दुनियावी हुकूमतें भी इस तरह की होती हैं पहले एक ग्रुप बनता है, फिर आहिस्ता-आहिस्ता उस की devepolment होती है, लेकिन वह तो होती ही dictatorship है फिर वह ताक़त (might is right) के उसूल पर चलते हैं। फिर संसार से वे हुकूमतें ले ली भी जाती हैं, बादशाह दूसरे मुल्क पर हमला करते हैं और हुकूमतों पर क़बज़ा करते हैं।

अत: इस्लाम हिक्मत का धर्म है। इस्लाम ने प्रत्येक बात की एक दलील दी है। इस्लाम ने बुनियादी तौर पर कहा कि ख़िलाफ़त का सम्बन्ध नबुव्वत के साथ है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि पहले नबुव्वत है, फिर ख़िलाफ़त अला मिन्हाजे नबुव्वत है। इसी तरीक़े पर चलने वाली ख़िलाफ़त है जो नबुव्वत के उसूल पर चलेगी। नबुव्वत का उसूल क्या था? नबुव्वत का उसूल यही था कि इन्साफ़ करो, अदल करो, ख़ुदा तआला की ओर लेकर आओ, रहम करो। यदि अत्याचार ही अत्याचार था तो अल्लाह तआला अपने आपको रहमान और रहीम नहीं कहता। यदि अत्याचार ही अत्याचार था तो अल्लाह तआला आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को रहमतुल लिल्आलमीन नहीं कहता, इस्लाम में जहां पर जंगें भी हुईं तो इस की दलीलें क़ुरआन करीम में लिखी हैं बग़ैर दलील के कोई जंग नहीं हुई। क़ुरआन करीम ने तो कहा कि तुम बिना कारण हमला न करो और तलवारें न चलानी शुरू कर दो, पहले दूसरे फ़रीक़ से पूछ लिया करो कि तुम क्या चाहते हो? जंग चाहते हो या सुलह चाहते हो? तुम्हारे ऊपर कोई जंग नहीं ठूंसता।

फ़रमाया : पवित्र क़ुरआन तो यह शिक्षा देता है कि जो तुम्हें सलाम कर देता है उस को भी यह न कहो कि तुम मोमिन नहीं हो। तो ख़िलाफ़त अता होने के भी कुछ उसूल हैं, तो उसी उसूल के तहत आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बताया पहले "नबुव्वत" है फिर नबुव्वत के तरीका पर ख़िलाफत है, फिर इसके बाद इसके अतिरिक्त कि इस्लाम की हुकूमत होगी और बादशाह अपने आपको ख़लीफ़ा कहेंगे लेकिन वह बादशाहत होगी, फिर इस से आगे जाबिर बादशाहत होगी, कट्टरवादी बादशाहत होगी। फिर वह ज़माना आएगा, जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का ज़हूर होगा। और फिर दुबारा आप अलैहिस्सलाम के बाद नबुव्वत की प्रणाली पर ख़िलाफत स्थापित होगी। अब यह जो दूसरे लोग हैं ख़िलाफ़त के दावेदार हैं, यह तो मुलूकियात और बादशाहत और जाबिर बादशाहत के ऊपर अमल कर रहे हैं। उन्होंने तो इस उसूल को तो माना नहीं जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक लंबी हदीस में वर्णन फ़रमाया था। तो वह उसूल यह था कष्ट देने वाले बादशाहत और अत्याचार करने वाली बादशाहत के बाद मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम आते और उनके बाद ख़िलाफ़त क़ायम होती और फिर ख़िलाफ़त इस्लाम की शिक्षा को जारी करती है।

यदि तलवार चलाकर संसार में इस्लाम को फैलाना है तो वह जो नहीं मानता, उस को क़तल करते चले गए। ईसाइयों को मार दिया।

एक ख़ूनी महदी आएगा, मसीह मौऊद भी आएगा और तलवारें भी चलायगा। मसीह मौऊद सुअरों को भी क़तल करेगा। दोनों इकट्ठे हो जाऐंगे फिर सारे संसार को तबाह कर देंगे तो पीछे रह कौन जाएगा। यह एक लंबी हदीस है संक्षेप में सारांश के रूप वर्णन कर रहा हूँ।

असल उसूल यही है कि जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हक़ीक़ी ख़िलाफ़त वह होगी जो मेरे महदी के आने के बाद क़ायम होगी। इस लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपने आपको ख़ातमुल खुल्फ़ा भी कहा है। अत: बग़ैर नबुव्वत के ख़िलाफ़त हो नहीं सकती। ख़ुलफ़ाए राशेदीन तो चार हो गए, अब यह बग़दादी साहिब हैं क्या यह पाँचवें ख़लीफ़ा हैं? फिर पिछले चौदह सौ वर्ष में तो कोई ख़लीफ़ा नहीं हुआ।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला ने फ़रमाया : अत: उसूल वही जो नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जाबिर बादशाहत के बाद मसीह मौऊद अलैहि अलैहिस्सलाम ने आना था और फिर उस के माध्यम से आगे ख़िलाफ़त क़ायम होनी थी जो नबुव्वत की बुनियाद पर इसी तरीक़ पर और इन्ही सिद्धांतों पर चलनी थी जिन पर पहले ख़िलाफ़त राशिदा चली। अत: यह अंतर है कि हम तो इस्लाम की शिक्षा के अनुसार अनुकरण करते हैं और जमाअत अहमदिया में उसूल और नियमों पर ख़िलाफ़त है। यह नहीं कि मैं खड़ा हो गया तो मैंने ऐलान कर दिया कि मैं ख़लीफ़ा हूँ और आपने मेरी बैअत कर ली। मैं तो बचता था ख़िलाफ़त न ही मिले तो अच्छी बात है। मुझे तो ज़बरदस्ती खींचा गया। जो दुनियावी ख़िलाफ़त है वह ज़बरदस्ती खींची जाती है और जो हक़ीक़ी ख़िलाफ़त है वह ज़बरदस्ती दी जाती है। अल्लाह तआला की ओर से दी जाती है। लोगों के दिलों में डाल के दी है।

जर्नलिस्ट ने प्रश्न किया कि लोग यह कहते हैं कि संसार में इतनी ज़्यादा तंज़ीमें हैं प्रत्येक यह कहता है कि हम सच्चे मुस्लमान हैं। तो आपके पास कोई ग़ैर मुस्लमानों के लिए मश्वरा है कि वह हक़ीक़ी मुस्लमानों को कैसे पहचान सकते हैं।

इस प्रश्न के उत्तर में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया

बात यह है कि प्रत्येक यह कहे कि बे-शक हम मुस्लमान हैं। मैंने तो पहले ही कह दिया है कि जो कहता है ला-इलाहा इल-लल्लाह मुहम्मद रसूल अल्लाह वह मुस्लमान है । बाक़ी रहा हक़ीक़ी कौन है और कौन नहीं तो इस के लिए फिर हमें उस के पास जाना पड़ेगा जिसको अल्लाह तआला ने इस्लाम की शिक्षा के साथ भेजा। तो वह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़ात है और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यही फ़रमाया था कि जिस तरह पहले यहूदीयों के 72 फिर्के थे यहां इस्लाम में तहत्तर फिर्के हो जाऐंगे। और जो 73 वां फ़िर्क़ा होगा वह जमाअत के साथ क़ायम होगा।

यह फ़िर्क़े किस तरह बने (Main) फिर्के तो 2 हैं। सुन्नी हैं या शीया हैं। अब उनमें भी subdivision हो गए हैं। अब सुन्नियों में 34, 35 फिर्के हैं। शीयों में भी इतने ही फिर्के हैं। जो असल फ़िक़्ह है जिस के ऊपर चलते हैं वह चार हैं, हनफ़ी, शाफी, मालकी, हंबली, लेकिन फिर्के 72 हैं। प्रत्येक मौलवी जो है उसने फ़िर्क़ा बना लिया है। इस बारे में मैंने कुछ हफ़्ते पहले एक ख़ुत्बा में भी बताया था। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह अन्हो के कुछ हवाले थे कि किस तरह प्रत्येक मौलवी जो कहता है मेरा यह धर्म है, जबकि

शेष पृष्ठ 9 पर

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिसने अली से मुहब्बत की उसने मुझसे मुहब्बत की और जिसने मुझसे मुहब्बत की उसने ख़ुदा से मुहब्बत की।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के महान ख़लीफ़ा राशिद और दामाद अबू तुराब हज़रत अली अल्मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की विशेषताओं का वर्णन

आप हर ख़ूबी में और लेखन शैली और वग्मयता के तरीक़ों में परिपूर्ण थे और जिसने आपकी विशेषताओं का इन्कार किया तो उसने निर्लज्जता की। (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम)

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया ख़बरदार मेरे बारे में दो तरह के आदमी हलाक होंगे। एक वह जो मुहब्बत में झूठ बोल कर मुझे वह स्थान देंगे जो कि मेरा स्थान नहीं है और दूसरा वह लोग जो मुझ से द्वेष रखेंगे और मेरी दुश्मनी में मुझ पर झूठ बाँधेंगे।

सहाबा का तक़्वा (संयम) यह था कोशिश करते थे कि क़ुरआन करीम के हर हुक्म पर अनुकरण करें।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को नसीहत की, फ़रमाया हे अली! रज़ियल्लाहु अन्हु! अगर तेरी तब्लीग़ से एक आदमी भी ईमान ले आए तो यह तेरे लिए इस से बेहतर है कि दो पहाड़ों के दरमयान तेरी भेड़ों और बकरीयों का एक बड़ा भारी गल्ला जा रहा हो और तू उसे देखकर ख़ुश हो

एम.टी.ए के चौबीस घंटे प्रसारण वाले नए चैनल "एम.टी.ए घाना'' के आरंभ का ऐलान।

पाकिस्तान और अल-जज़ाइर के अहमदियों के विरोध को दृष्टिगत रखते दुआओं की पुनः तहरीक।

पाकिस्तान के अहमदियों को नवाफ़िल और दुआओं और सदक़ात पर-ज़ोर देने का आदेश

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 15 जनवरी 2020 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का वर्णन चल रहा था आज भी आप का वर्णन ही होगा और आज आप के बारे में जो मालूमात, जो मवाद मैंने इकट्ठा किया हुआ था वह मुकम्मल हो जाएगा। इंशा अल्लाह।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम फ़रमाते हैं "हज़रत इमाम हुसैन साहब रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक बार प्रश्न किया "अर्थात हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से'' कि आप मुझसे मुहब्बत करते हैं? हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया हाँ। हज़रत हुसैन अलैहिस्सलाम ने इस पर बड़ा आश्चर्य किया और कहा कि एक दिल में दो मुहब्बतें किस तरह एकत्र हो सकती हैं? फिर हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम ने कहा कि मुक़ाबला के समय आप किस से मुहब्बत करेंगे? फ़रमाया" (हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया) "अल्लाह से।"

(मल्फ़ूज़ात,भाग 7 पृष्ठ 57)

इस घटना का वर्णन फ़रमाते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु वर्णन फ़रमाते हैं कि

"हज़रत हस्न रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से एक प्रश्न किया कि आपको मुझसे मुहब्बत है? हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया हाँ। हज़रत हस्न रज़ियल्लाहु अन्हु ने फिर प्रश्न किया कि क्या आपको ख़ुदा तआला से भी मुहब्बत है? हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया हाँ। हज़रत हस्न रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा तब तो आप एक रंग में शिर्क करने वाले हुए। शिर्क उसी को कहते हैं कि ख़ुदा तआला के साथ उस की मुहब्बत में किसी और को बराबर बना लिया जाए। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया हस्न (रज़ियल्लाहु अन्हु)! मैं शिर्क करने वाला नहीं हूँ। मैं निसन्देह तुझ से मुहब्बत करता हूँ लेकिन जब तेरी मुहब्बत ख़ुदा तआला की मुहब्बत से टकरा जाए तो मैं तुरंत इसे छोड़ दूँगा

(करूने ऊला की नामवर ख़वातीन और सहाबियात के ईमान अफ़रोज़ .... अन्वारुल ऊलूम, भाग 21 पृष्ठ 623)

फिर हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में एक जगह एक घटना वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं कि "हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को जब कोई बड़ी मुसीबत पेश आती तो वह अल्लाह तआला से यह दुआ किया करते थे कि يَا كٓهٰيٰعٓصٓ اغْفِرْ لِي - يعنى ا كٓهٰيٰعٓصٓ! अर्थात हे كٓهٰيٰعٓصٓ मुझे माफ़ कर दे।" (तफ़सीरे कबीर, भाग 5 पृष्ठ 17)

उम्मे हानि की एक रिवायत के अनुसार इन स्थानों के यह अर्थ हैं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि क़ाफ़ क़ायम मक़ाम सिफ़त काफ़ी का है, और हा हादी गुण का कायम मुक़ाम है और ऐन गुण आलम या अलीम का क़ायम मुक़ाम है और सुआद गुण सादिक़ का क़ायम मक़ाम है।

(उद्धरित तफ़सीरे कबीर, भाग 5 पृष्ठ 17)

अर्थात अल्लाह तआला से यह दुआ मांग रहे हैं कि हे अल्लाह तू काफ़ी है। तू हादी है। तू ज्ञानी है और तू सच्चा है, सादिक़ है। तेरी समस्त सिफ़ात (विशेषताओं) का वास्ता है कि मुझे बख़्श दे।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु वर्णन फ़रमाते हैं कि "मुफ़स्सिरीन हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की एक घटना भी वर्णन करते हैं कि उन्होंने एक बार अपने एक नौकर को आवाज़ दी परन्तु वह नहीं बोला। आप ने बार-बार आवाज़ दी परन्तु फिर भी उसने कोई उत्तर नहीं दिया। थोड़ी देर के बाद वह लड़का संयोग से आप को सामने नज़र आ गया तो आपने इस से पूछा مَا لَكَ لَمْ تُجِبْنِي कि तुझे क्या हो गया कि मैंने तुझे इतनी बार बुलाया परन्तु तू फिर भी नहीं बोला। قَالَ لِثِقَتِي بِحِلْمِكَ وَأَمْنِي مِنْ عُقُوبَتِكَ فَاسْتَحْسَنَ جَوَابَهُ وَأَعْتَقَهُ۔

उसने कहा कि असल बात यह है कि मुझे आपकी नर्मी पर विश्वास था और आपकी सज़ा से में अपने आपको महफ़ूज़ समझता हूँ। इस लिए मैंने आपकी बात का उत्तर नहीं दिया। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को इस लड़के का यह उत्तर पसंद आया तो आपने उसे आज़ाद कर दिया।" (तफ़सीरे कबीर,भाग 8 पृष्ठ 255)

अब कोई दुनियादार होता तो शायद उसे सज़ा देता कि तू मेरी नर्मी से नाजायज़ लाभ उठा रहा है लेकिन आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने उस को इनाम से नवाज़ा।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन फ़रमाते हैं कि "हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के बेटों हस्न रज़ियल्लाहु अन्हु और हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु को एक व्यक्ति पढ़ाया करता था। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु एक बार अपने बच्चों के पास से गुज़रे तो आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने सुना कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु के बच्चों को उनका उस्ताद खातमन नबिय्यीन पढ़ा रहा था। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया : मेरे बच्चों को खातमन नबिय्यीन न पढ़ाओ बल्कि खातमन नबिय्यीन पढ़ाया करो'' अर्थात "त" के नीचे ज़ेर के स्थान पर "त" के ऊपर ज़बर के साथ पढ़ाओ।'' अर्थात निसन्देह यह दोनों किरातें हैं लेकिन मैं खातमन नबिय्यीन की किरात को ज़्यादा पसंद करता हूँ क्योंकि ख़ात्मन नबिय्यीन के अर्थ हैं नबियों की मुहर और खातिमन नबिय्यीन के अर्थ हैं नबियों को ख़त्म करने वाला। मेरे बच्चों को ते ज़बर से पढ़ाया करो।"

(फ़रीज़ा तब्लीग़ और अहमदी ख़वातीन, अन्वारुल ऊलूम, भाग 18 पृष्ठ 404)

फिर हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन फ़रमाते हैं "हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में भी साबित होता है कि वह क़ुरआन शरीफ़ के हाफ़िज़ थे बल्कि उन्होंने क़ुरआन शरीफ़ के नुज़ूल के क्रम की दृष्टि से क़ुरआन लिखने

का काम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात के तुरन्त बाद शुरू कर दिया था।"(दीबाचा तफ़सीरुल क़ुरआन, अन्वारुल ऊलूम, भाग 20 पृष्ठ 429)

एक जगह हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि "रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को किसी सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु ने खाने पर बुलाया। कुछ सहाबा ज़ियल्लाहु अन्हु भी निमंत्रित थे जिनमें हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु भी शामिल थे। आप रज़ियल्लाहु अन्हु की उम्र निसबतन छोटी थी "हज़रत अली की उम्र छोटी थी" इस लिए कुछ सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु को आपसे मज़ाक़ की सूझी। वह खजूरें खाते-जाते थे और गुठलियां हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के सामने रखते जाते थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी इसी तरह कर रहे थे। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु जवान थे खाने में व्यस्त रहे और इस तरफ़ नहीं देखा। जब देखा तो गुठलियों का ढेर आप रज़ियल्लाहु अन्हु के सामने लगा हुआ था। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु ने मज़ाक़न हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा तुमने सारी खजूरें खाई हैं!! यह देखो सारी गुठलियां तुम्हारे आगे पड़ी हैं। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की तबीयत में भी मज़ाक़ था। चिड़चिड़ापन नहीं था। चिड़चिड़ापन होता तो आप सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु से लड़ पड़ते और कहते कि आप मुझ पर इल्ज़ाम लगाते हैं या मुझ पर बदज़नी करते हैं। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु समझ गए कि यह मज़ाक़ है जो उन से किया गया है। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने सोचा कि अब मेरी ख़ूबी यह है कि में भी इस का उत्तर मज़ाक़ में दूं। इसलिए आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया आप सब गुठलियां भी खा गए हैं लेकिन मैं गुठलियां रखता रहा हूँ कि आप सब लोग जब खा रहे थे तो गुठलियों समेत खजूरें खा गए हैं लेकिन मैंने गुठलियां रखी हुई हैं'' और सबूत उस का यह है कि गुठलियों का ढेर मेरे सामने पड़ा है। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु पर यह मज़ाक़ उलट पड़ा।"

(ख़ुत्बाते महमूद, भाग 33 पृष्ठ 259-260)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु एक जगह हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में वर्णन फ़रमाते हैं कि "हदीसों में आता है कि एक दफ़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम क़ुरआन मजीद की तिलावत फ़र्मा रहे थे कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने लुक़मा दिया। नमाज़ के बाद आपने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया कि यह तुम्हारा काम नहीं था। ग़लती की तरफ़ तवज्जा दिलाने के लिए मैंने आदमी निर्धारित किए हैं।''

(खुत्बाते महमूद, भाग 25 पृष्ठ 299)

नमाज़ में क़ुरआन करीम की तिलावत कर रहे थे तो कहीं आगे पीछे हो गया होगा और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने लुक़्मा दिया तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मैंने इस के लिए निर्धारित किए हुए हैं तुम न दो। हालाँकि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु भी काफ़ी आलिम थे।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु एक और जगह वर्णन फ़रमाते हैं कि

"क़ुरआन करीम में हुक्म है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) से कोई मश्वरा लो तो पहले सदक़ा दे लिया करो। कहते हैं हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस हुक्म से पहले कभी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से कोई मश्वरा नहीं लिया था परन्तु जब यह हुक्म नाज़िल हुआ तो हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हुए और कुछ रक़म बतौर सदक़ा पेश करके निवेदन किया कि मैं कुछ मश्वरा लेना चाहता हूँ। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अलग जा कर हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से बातें कीं। किसी दूसरे सहाबी ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछा कि क्या बात थी जिसके सम्बन्ध में आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने मश्वरा लिया? हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने उत्तर दिया कि कोई ख़ास बात तो मश्वरे वाली नहीं थी परन्तु मैंने चाहा कि क़ुरआन करीम के इस हुक्म पर भी अनुकरण हो जाए।''

(खुत्बाते महमूद ,भाग 25 पृष्ठ 752)

ये थे सहाबा के तरीक़े। एक जगह यह घटना इस तरह भी मिलती है कि एक सहाबी लोगों के घरों में जाया करते थे कि क़ुरआन करीम का यह जो हुक्म है कि अगर तुम्हें कोई घरवाला कहे कि वापस चले जाओ तो वापस चले जाओ। कहते हैं मैं ने कई बार कोशिश की बल्कि कई बार रोज़ाना कोशिश की, किसी न किसी घर में जाता कि कोई मुझे कहे कि वापस चले जाओ और मैं ख़ुशी ख़ुशी वापस आ जाऊं ताकि क़ुरआन करीम के हुक्म का अनुपालन हो जाए लेकिन मेरी यह ख़ाहिश कभी पूरी नहीं हुई। किसी घर वाले ने कभी मुझे यह नहीं कहा कि वापस चले जाओ।

(तफ़सीरुल जामे अहकामुल क़ुरआन लिल्कुर्तबी, भाग 15 पृष्ठ 199 सूरत नूर आयत 29 मोअस्सासा रिसालत बेरूत 2006 ई)

आजकल अगर हम किसी को कहें कि व्यस्त हैं, वापस चले जाओ या मुलाक़ात नहीं हो सकती तो लोग बुरा मान जाते हैं लेकिन सहाबा का तक़्वा (संयम) यह था कोशिश करते थे कि क़ुरआन करीम के हर हुक्म पर अमल करें।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन फ़रमाते हैं कि "रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक दफ़ा किसी उद्देश्य के लिए सहाबा से चंदा मांगा। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु बाहर गए घास काटा और उसे बेच कर जो क़ीमत मिली वह चंदा में दे दी।"

(खुत्बाते महमूद, भाग 33 पृष्ठ 357)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे एक बार घटनाएं वर्णन फ़रमाते हुए एक जगह शायद अपने दर्स में वर्णन फ़रमाया था कि हज़रत अल्लामा उबैदुल्लाह साहिब बिस्मिल एक चोटी के शीया आलिम थे। इतने बुज़ुर्ग और इतने ज्ञान में गहरे और मुतबह्हिर कि जब यह अहमदी हो गए तो उस के बाद हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने में ही नहीं बाद में पार्टीशन तक, पार्टीशन के बाद भी उनकी कुछ पुस्तकें अभी तक अध्यापन के तौर पर शीया मदरसों में पढ़ाई जा रही हैं क्योंकि मुझे याद है ख़लीफ़तुल मसीह राबे कहते हैं कि एक बार एक शीया दोस्त मेरे पास बातचीत के लिए आए जब मैं वक़्फ़ जदीद में होता था तो बातचीत के बाद उन्होंने इतमीनान का इज़हार किया और अल्लाह के फ़ज़ल से अहमदी हो गए। इस फ़ैसला के बाद उन्होंने बताया कि मैं पहले आपको बताया नहीं करता था। पहले वह एक शीया आलिम थे, उनका मुझे ओहदा याद नहीं परन्तु वह शेख़ूपूरा के किसी गांव या फैसलाबाद के किसी गांव, उनके आसपास के इलाक़े के थे कहीं के, उन्होंने बताया कि मैं शीयों में यह स्थान रखता हूँ, आलिम हूँ। अर्थात कि यह जो आदमी जिन्हों ने बैअत की उनके बारे में ख़लीफ़ा राबे कह रहे हैं कि वह शीया आलिम थे। और (वह कहते हैं) मैं आलिम हूँ और शीयों में काफ़ी सम्मान रखता हूँ लेकिन आज मैं आपको यह बता रहा हूँ कि अभी तक उबैदुल्लाह साहिब बिस्मिल की पुस्तकें हमारे मदरसों में पढ़ाई जा रही हैं। इतना उनका प्रभाव है, उनके इल्म का और हमें यह लोग बताते नहीं। ख़लीफ़ा राबे कहते हैं हमें यह शीया लोग नहीं बताते कि किस तरह वह बिस्मिल साहिब की किताबें पढ़ा रहे हैं। आप बता रहे हैं कि मुझे तो वैसे पता लग गया है इस आलिम के द्वारा। लेकिन यह वहां पढ़ाते हुए नहीं बताते कि वह कौन था और बाद में, बिस्मिल साहिब के साथ क्या हुआ। उन्होंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम को क़बूल किया और उन सारी इज़्ज़तों को पीठ के पीछे फेंक दिया जो उनको उस ज़माने में शीया मसलक से हासिल थीं। यह उनकी पुस्तकों का हवाला है अर्थात किसी मामूली आदमी का हवाला नहीं है। इस किताब का हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे दे रहे हैं। यह सारी प्रस्तावना बांध कर कि अल्बज़ार ने अपनी मस्नद में लिखा है कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने लोगों से पूछा कि बताओ कि सबसे ज़्यादा बहादुर कौन है? उत्तर दिया कि आप सबसे ज़्यादा बहादुर हैं। आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि मैं तो हमेशा अपने बराबर के जोड़ से लड़ता हूँ फिर में सबसे ज़्यादा बहादुर कैसे हुआ? अब तुम यह बताओ कि सबसे ज़्यादा बहादुर कौन है? हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने दुबारा पूछा। यह बिस्मिल साहिब ने एक किताब के हवाले से अपनी किताब में लिखा हुआ है। लोगों ने कहा कि जनाब हम को नहीं मालूम आप ही फ़रमाएं। आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने इरशाद किया कि सबसे ज़्यादा बहादुर और साहसी हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हैं। आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने इरशाद किया अर्थात हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने इरशाद किया कि सबसे ज़्यादा बहादुर और साहसी हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु सुनो ! बदर की जंग में हम ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए एक साएबान बनाया था। हमने आपस में मश्वरा किया कि इस साएबान के नीचे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ कौन रहेगा? कहीं ऐसा न हो कि कोई मुशरिक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर हमला कर दे। बख़ुदा हम में से कोई भी आगे नहीं बढ़ा कि इतने में हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु नंगी तलवार के साथ, नंगी तलवार हाथ में लेकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास खड़े हो गए और फिर किसी मुशरिक को आपके पास आने की जुर्रत नहीं हो सकी। अगर किसी ने ऐसी जुर्रत की भी तो आप तुरंत उस पर टूट पड़े। इसलिए आप रज़ियल्लाहु अन्हु ही सबसे ज़्यादा बहादुर हैं अर्थात हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु। यह हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं। एक बार की घटना है कि मुशरिकीन ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अपने नर्ग़े में ले लिया

और वह आपको घसीट रहे थे और कह रहे थे कि तुम ही वह हो जो कहते हो कि ख़ुदा एक है। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़र्मा रहे हैं कि ख़ुदा क़सम! किसी को मुशरिकीन से मुक़ाबला करने की जुर्रत नहीं हुई लेकिन हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु आगे बढ़े और मुशरिकीन को मार-मार कर और धक्के दे देकर हटाते जाते और फ़रमाते जाते, तुम पर अफ़सोस है कि तुम ऐसे व्यक्ति को कष्ट पहुंचा रहे हो जो यह कहता है कि मेरा पालनहार केवल अल्लाह है। यह फ़रमा कर हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपनी चादर उठाई, चादर मुँह पर रखकर इतना रोय कि आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की दाढ़ी भीग गई फ़रमाया: अल्लाह तआला तुमको हिदायत दे। हे लोगो बताओ कि मोमिन ऑले फ़िरऔन अच्छे थे कि अबू बकर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अच्छे हैं। ऑले फ़िरऔन से जो लोग ईमान लाए उन्होंने अपने पैग़ंबर पर इस क़दर जाँनिसारी नहीं की जितनी अबू बकर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने की है। लोग यह सुनकर ख़ामोश रहे तो हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि लोगो! उत्तर क्यों नहीं देते। ख़ुदा की क़सम अबू बकर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का एक मिनट ऑले फ़िरऔन के मोमिन के हज़ार मिन्टों से बेहतर है और बढ़कर है इसलिए कि वे लोग अपना ईमान छुपाते फिरते थे और अबू बकर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपने ईमान का इज़हार घोषणा करके किया।

(उद्धरित दर्सुल क़ुरआन हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह फ़र्मूदा 16 फरवरी 1994 ई)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन फ़रमाते हैं कि "रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को नसीहत की। फ़रमाया हे अली रज़ियल्लाहु अन्हु अगर तेरी तब्लीग़ से एक आदमी भी ईमान ले आए तो यह तेरे लिए इस से बेहतर है कि दो पहाड़ों के दरमयान तेरी भेड़ों और बकरियों का एक बड़ा भारी गल्ला जा रहा हो और तू उसे देखकर ख़ुश हो।"

(हमारे ज़िम्मा समस्त दुनिया को फ़तह करने का काम है, अन्वारुल ऊलूम ,भाग 18 पृष्ठ 464)

उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा वर्णन करती हैं कि मैं गवाही देती हूँ कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना जिसने अली रज़ियल्लाहु अन्हु से मुहब्बत की उसने मुझसे मुहब्बत की और जिसने मुझसे मुहब्बत की उसने अल्लाह से मुहब्बत की और जिसने अली रज़ियल्लाहु अन्हु से द्वेष रखा उसने मुझ से द्वेष रखा और जिसने मुझ से द्वेष रखा उसने अल्लाह से द्वेष रखा।(मजमा ज़वायद भाग 9 पृष्ठ 126 किताबुल मनाकिब, मनाक़िब अली बिन तालिब, हदीस 14757 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत2001 ई)

हज़रत ज़र वर्णन करते हैं कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि उस ज़ात की क़सम जिस ने दाने को फाड़ा और रूह को पैदा किया। यक़ीनन नबी उम्मी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यह मुझ से अह्द था कि मुझ से सिर्फ मोमिन मुहब्बत रखेगा और सिर्फ मुनाफ़िक़ मुझ से द्वेष रखेगा। (सही मुस्लिम किताबुल ईमान,बाबुल दलील अला मन हुब्बिल अन्सार हदीस नंबर 240)

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझे बुलाया और फ़रमाया कि तुम्हारी मिसाल हज़रत ईसा की सी है जिन से यहूदीयों ने इतना द्वेष किया कि उनकी माता पर झूठ बांध दिया और ईसाई लोग आप मुहब्बत अर्थात ईसा अलैहिस्सलाम की मुहब्बत में इस क़दर बढ़ गए कि उन्होंने आप को वह स्थान दे दिया जो कि उनका स्थान नहीं था। फिर हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया : ख़बरदार! मेरे बारे में दो तरह के आदमी हलाक होंगे। एक वह जो मुहब्बत में झूठ बोल कर के मुझे वह स्थान देंगे जो कि मेरा स्थान नहीं है और दूसरे वे लोग जो मुझ से द्वेष रखेंगे और मेरी दुश्मनी में मुझ पर झूठ बाँधेंगे।

(मस्नद अहमद बिन हमबल, भाग 1 पृष्ठ 439 मस्नद अली बिन अबी तालिब, हदीस 1377 अलेमुल क़ुतुब बेरूत 1998 ई)

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के माल अर्थात वह माले ग़नीमत जो दुश्मन से जंग किए बग़ैर हाथ लगे, उस की तक़सीम में हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के तरीक़ को इख़तियार करते थे। आप रज़ियल्लाहु अन्हु के पास जब भी माल आता तो आप रज़ियल्लाहु अन्हु सारे का सारा तक़सीम कर देते और इस में से कुछ भी बचा कर नहीं रखते सिवाए इसके जो इस रोज़ तक़सीम होने से रह जाता। आप रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाया करते थे कि हे दुनिया! जा मेरे अतिरिक्त किसी और को जा कर धोका दे। आप फै के माल में से न तो ख़ुद लेते और न किसी गहरे दोस्त या प्रिय को इस में से कुछ देते। आप रज़ियल्लाहु अन्हु गवर्नर और ओहदा इत्यादि केवल दियानतदार और अमीन लोगों को देते। जब आपको उनमें से किसी की ख़ियानत की ख़बर पहुँचती तो आप उनको यह आयात लिख कर भेजते। قَدْ جَاءَتْكُمْ مَوْعِظَةٌ مِنْ رَبِّكُمْ (यूनुस : 58) निसन्देह तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से नसीहत की बात आचुकी है और اَوْفُوا الْكَيْلَ وَالْمِيْزَانَ بِالْقِسْطِ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ اَشْيَاءَهُمْ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ۔ بَقِيَّتُ اللّٰهِ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ وَمَا اَنَا عَلَيْكُمْ بِحَفِيْظٍ (हूद : 86-87) माप और तौल को इन्साफ़ के साथ पूरा किया करो और लोगों की चीज़ें उनको कम करके न दिया करो और ज़मीन में मुफ़सिद बनते हुए बदअमनी न फैलाओ। अल्लाह की तरफ़ से जो व्यापार में बचता है वही तुम्हारे लिए बेहतर है यदि तुम सच्चे मोमिन हो और मैं तुम पर निगरान नहीं हूँ। तथा उसे लिखते जब मेरा यह ख़त तुम्हारे पास पहुंचे तो तुम्हारे पास हमारे जो धन हैं वह सँभाल कर रखना यहां तक कि हम तुम्हारी तरफ़ किसी ऐसे व्यक्ति को भेजें जो तुमसे वह धन वसूल करे।

फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हु आपनी नज़रें आसमान की तरफ़ करके फ़रमाते अल्लाह! निसंदेह तू जानता है कि मैंने उन्हें तेरी मख़लूक़ पर अत्याचार करने और तेरे हक़ को छोड़ने का हुक्म नहीं दिया था।

अब्जर बिन जुर्मूस अपने पिता से रिवायत करते हैं कि उन्होंने कहा मैं ने हज़रत अली बिन अबू तालिब को देखा कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु कूफ़ा से निकल रहे थे और आप रज़ियल्लाहु अन्हु के ऊपर दो कतरी चादरें थीं। कतर बेहरीन की एक बस्ती का नाम है जहां सुर्ख़ धारीदार चादरें बनती थीं। जिनमें से एक को आपने तेहबंद के तौर पर बाँधा हुआ था और दूसरी को ऊपर लिया हुआ था। आपकी तेहबंद आधी पिंडली तक थी। आप एक कोड़ा थामे हुए बाज़ार में चल रहे थे और लोगों को अल्लाह का तक़्वा (संयम) इख़तियार करने, सच्ची बात कहने, उम्दगी से खरीदने बेचने और नाप तौल और वज़न को पूरा करने का आदेश फ़र्मा रहे थे।

मुजम्मे तीमी से रिवायत है कि एक दफ़ा हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने बैतुलमाल में जितना माल था वे सारे का सारा मुस्लमानों में तक़सीम कर दिया। फिर आपके हुक्म से इस में चूना करवाया गया। फिर आपने इस में इस उम्मीद पर नमाज़ पढ़ी कि क़ियामत के दिन वह आप के लिए गवाही दे।

(अल्इस्तेयाब फ़ी मअरेफ़तिल सहाबा, भाग 3 पृष्ठ 1111 से 1113 वर्णन अली बिन अबी तालिब, दारुल जलील बेरूत 1992 ई)(लुग़ातुल हदीस, भाग 3 पृष्ठ 575 नुमानी पुस्तकख़ाना लाहौर 2005 ई)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु का वर्णन करते हुए एक स्थान पर फ़रमाते हैं कि "हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने 7 दिसंबर 1892 ई को अपना एक स्वप्न वर्णन फ़रमाया कि क्या देखता हूँ कि मैं हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु बन गया हूँ अर्थात स्वप्न में ऐसा मालूम करता हूँ कि वही हूँ। और स्वप्न की विचित्रताओं में से एक यह भी है कि कभी कबार एक व्यक्ति अपने से दूसरा व्यक्ति ख़्याल कर लेता है अत: उस समय में समझता हूँ कि मैं अली मुर्तज़ा हूँ और ऐसी स्थिति बनी है कि एक गिरोह ख़वारिज का मेरी ख़िलाफ़त का प्रतिरोधी हो रहा है अर्थात वह गिरोह मेरी ख़िलाफ़त के कार्य को रोकना चाहता है और उस में उपद्रवी है। तब मैंने देखा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मेरे पास हैं और स्नेह और प्रेम से मुझे फ़रमाते हैं कि! يَا عَلِيُّ دَعْهُمْ وَانْصَارَهُمْ وَزِرَاعَتَهُمْ۔ अर्थात हे अली! उनसे और उनके मददगारों और उनकी खेती से किनारा कर और उनको छोड़ दे और उनसे मुँह फेर ले और मैं ने पाया कि इस उपद्रव के वक़्त सब्र के लिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुझ को फ़रमाते हैं और बचने के लिए आदेश देते हैं और कहते हैं कि तू ही हक़ पर है परन्तु उन लोगों से बात चीत बंद करना उचित है।"

(बरकाते ख़िलाफ़त , अन्वारुल ऊलूम ,भाग 2 पृष्ठ 176)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन फ़रमाते हैं कि "हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने ख़वारिज के लश्कर की समस्त चीज़ों पर क़बज़ा कर लिया। हथियार और जंगी सवारियां तो लोगों में बाँट दीं लेकिन सामान, ग़ुलाम और लौंडियों को कूफ़ा वापस आने पर उनके मालिकों को लौटा दिया।"

(मसला वह्यी नबुव्वत के सम्बन्ध में इस्लामी दृष्टिकोण, अन्वारुल ऊलूम, भाग 23 पृष्ठ 363)

फिर एक और हवाले से हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु बयान फ़रमाते हैं कि "हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माना की तुलना में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का ज़माना रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से ज़्यादा दूर था। यही हाल हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु का था। निसन्देह उनका दर्जा अपने से पहले ख़लीफाओं से कम था लेकिन उनके समय जो घटनाएं हुई उनमें उनके दर्जा का इतना प्रभाव नहीं था जितना रसूल करीम के ज़माना से दूर होने का प्रभाव था क्योंकि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु

अन्हु और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के समय अधिकतर वे लोग थे जिन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सोहबत उठाई थी लेकिन बाद में दूसरों का ज़्यादा दख़ल हो गया। इसलिए जब हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से किसी ने पूछा कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के अह्द में तो ऐसे फ़ित्ने और फ़साद नहीं होते थे जैसे आप रज़ियल्लाहु अन्हु के वक़्त में हो रहे हैं तो उन्होंने कहा बात यह है कि अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु और उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के अधीन मेरे जैसे लोग थे और मेरे अधीन तेरे जैसे लोग हैं।" (जमात अहमदिया और हमारी ज़िम्मेदारियाँ , अन्वारुल ऊलूम, भाग 5 पृष्ठ 95)

फिर एक और जगह हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु एक घटना का वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं कि "एक व्यक्ति इस ज़माना में जबकि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु और मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु के दरमयान जंग जारी थी हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास आकर कहने लगा कि आप हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माना की जंगों में क्यों शामिल नहीं होते हालाँकि क़ुरआन-ए-करीम में साफ़ हुक्म मौजूद है कि وَقٰتِلُوْهُمْ حَتّٰى لَا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ उन्होंने उत्तर दिया कि....... हमने यह हुक्म रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के वक़्त में पूरा कर दिया है जबकि इस्लाम बहुत छोटा था और आदमी को इस के दीन की वजह से उपद्रव में डाला जाता था अर्थात या तो उसे क़तल किया जाता था या अज़ाब दिया जाता था यहां तक कि इस्लाम फैल गया। फिर किसी को उपद्रव में नहीं डाला जाता था।" (तफ़सीरे कबीर, भाग 2 पृष्ठ 427-428)

अर्थात यदि जंगें थीं तो धर्म बदलने के लिए थीं और उनके ख़िलाफ़ थीं जो धर्म बदलना चाहते थे। अब यहां तो धर्म क़ायम हो गया। इस्लाम क़ायम हो गया। अक़ीदे का तो कोई मतभेद नहीं है। कुछ आन्तरिक मतभेद हैं इसलिए मैं जंगों में शामिल नहीं होता। बहरहाल यह उनका अपना एक दृष्टिकोण था।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन फ़रमाते हैं कि "जब रूमी बादशाह ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु की जंग की ख़बर मालूम करके इस्लामी हकूमतों पर हमला करना चाहा तो हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु ने उसे लिखा कि होशियार रहना हमारे आपस के मतभेद से धोखा न खाना। अगर तुमने हमला किया तो हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की तरफ़ से जो पहला जरनैल तुम्हारे मुक़ाबला के लिए निकलेगा वह मैं होऊंगा।"

(तफ़सीरे कबीर, भाग 4 पृष्ठ 430)

आपने इसका थोड़ा विस्तार से वर्णन इस तरह भी फ़रमाया कि एक ज़माना वह था कि जब रुम के बादशाह ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु में मतभेद देखा तो उसने चाहा कि वह मुस्लमानों पर हमला करने के लिए एक लश्कर भेजे। उस वक़्त रूमी हकूमत की ऐसी ही ताक़त थी जैसी इस वक़्त अमरीका की है। उसका लश्कर भेजने का इरादा देखकर एक पादरी ने जो बड़ा होशयार था कहा बादशाह सलामत आप मेरी बात सुनलें और लश्कर भेजने से बचें। यह लोग जबकि आपस में मतभेद रखते हैं लेकिन आपके मुक़ाबले में एक साथ हो जाऐंगे और बीच के मतभेद भूल जाऐंगे। फिर उसने एक मिसाल दी वह भी शायद उसने तहक़ीर के रंग में ही दी हो बहरहाल किस नीयत से दी, तहक़ीर की नीयत से या वैसे ही समझा होगा कि यह बेहतर मिसाल है। उसने कहा कि आप कुत्ते मंगवाएं और उन्हें एक लम्बे समय तक भूखा रखें। फिर उनके आगे गोश्त डालें वह आपस में लड़ने लग जाऐंगे। अगर आप उन्हें कुत्तों पर शेर छोड़ दें तो वे दोनों अपने मतभेद को भूल कर शेर पर झपट पड़ेंगे। इस उदाहरण से उसने यह बताया कि तू चाहता है कि इस वक़्त हज़रत अली और मुआविया के मतभेद से लाभ उठा ले लेकिन मैं यह बता देता हूँ कि जब भी किसी बाहरी दुश्मन से लड़ने का प्रश्न पैदा होगा यह दोनों अपने बीच के मतभेद भूल जाऐंगे और दुश्मन के मुक़ाबले में एक साथ खड़े हो जाऐंगे और हुआ भी यही। जब हज़रत मुआवीया को रोम के बादशाह के इरादे का ज्ञान हुआ तो आपने उसे संदेश भेजा कि तू चाहता है कि हमारे मतभेदों से लाभ उठा कर मुस्लमानों पर हमला करे लेकिन मैं तुम्हें बता देना चाहता हूँ कि मेरी हज़रत अली के साथ निसन्देह लड़ाई है लेकिन यदि तुम्हारा लश्कर हमला करने आया तो हज़रत अली की तरफ़ से इस लश्कर का मुक़ाबला करने के लिए जो सबसे पहला जरनैल निकलेगा वह मैं होऊंगा। (उद्धरित मज्लिस खुद्दामुल अहमदिया मर्कज़िया का इज्तिमा 1956 ई. में भाषण, अन्वारुल ऊलूम,भाग 25 पृष्ठ 416-417)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि उन्होंने कहा कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते थे कि हम में सबसे बेहतर क़ुरआन पढ़ने वाले उबैय बिन क़ाब रज़ियल्लाहु अन्हु हैं और हममें से बेहतर फ़ैसला करने वाले अली रज़ियल्लाहु अन्हु हैं। (सही बुख़ारी, किताब तफ़सीर सूरत अल् बक़र:, बाब قوله ما ننسخ من آية او ننسها نات بخير منها او مثلها हदीस 4481)

हज़रत उम्मे अतिया वर्णन करती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक लश्कर भेजा जिसमें हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु भी थे। वह वर्णन करती हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह दुआ करते सुना। हे अल्लाह! तू मुझे मौत न देना जब तक कि तू मुझे अली रज़ियल्लाहु अन्हु को दिखा न दे।

(उसुदुल ग़ाबाह ले मअरफतिल सहाबा, भाग 4 पृष्ठ 100 वर्णन अली बिन अबी तालिब, दारुल फ़िक्र बेरूत 2003 ई.)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक दफ़ा हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को एक जंग में भेजा। जब वह वापस आए तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनसे फ़रमाया अल्लाह और उसका रसूल और जिब्राईल तुझ से राज़ी हैं।

(कन्ज़ुल अम्माल, भाग 13 पृष्ठ 107 हदीस 36349 मोअस्सासा रसालाह बेरूत1985 ई.)

एक जगह एक घटना आती है कि अमीर मुआविया ने ज़रार सुदाई से कहा कि मुझे हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की विशेषताएँ बताओ। उसने कहा कि अमीरुल मोमनीन मुझे इससे माफ़ फ़रमाएं। अमीर मुआविया ने कहा तुम्हें बताना पड़ेगा। ज़रार ने कहा कि अगर यह बात है तो फिर सुनें। ख़ुदा की क़सम ! हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु बुलन्द हौसला और मज़बूत ताक़त के मालिक थे। निर्णायक बात कहते और न्याय से फ़ैसला करते थे। आप ज्ञान और विवेक का बहता स्रोत थे और आपकी हर बात से दूरदर्शिता टपकती थी। आप रज़ियल्लाहु अन्हु संसार और उस की रौनक़ों को पसन्द नहीं करते और रात ख़ुदा की इबादत में गुज़ारते थे। आप रज़ियल्लाहु अन्हु बहत रोने वाले और बहुत ग़ौर तथा फ़िक्र करने वाले इन्सान थे। आप रज़ियल्लाहु अन्हु सादा लिबास और निहायत सादा खाना पसंद करते थे। आप हमारे मध्य हमारे जैसे एक आम व्यक्ति की तरह रहते थे। हम प्रश्न करते तो आप उत्तर देते और किसी घटना के विषय पर पूछा करते तो उस के बारे में बताते। ख़ुदा की क़सम! इसके अतिरिक्त की हमारा उनसे और उनका हमसे मुहब्बत और प्रेम का बड़ा सम्बन्ध था परन्तु हम उनके रोब की वजह से उनसे कम-कम बात करते थे। वह दीनदार लोगों का सम्मान करते और ग़रीबों को अपने पास स्थान देते थे। कोई ताक़तवर व्यक्ति यह इच्छा नहीं रख सकता था कि वह अपनी झूठी बात आपसे मनवा लेगा और कोई कमज़ोर व्यक्ति आपके अदल और इन्साफ़ से निराश नहीं होता था। ख़ुदा क़सम! कुछ अवसरों पर मैंने देखा कि जब रात ढल जाती और सितारे निकल आते तो आप अपनी दाढ़ी पकड़ कर ऐसे तड़पते जैसे साँप का डसा हुआ व्यक्ति तड़पता है और अत्यधिक दुखी व्यक्ति की तरह रोते और कहते हे दुनिया जा तू मेरे सिवा किसी और को जा कर धोका दे। क्या तू मेरे मुँह लगती है और मुझे बन-सँवर कर दिखाती है। तू जो चाहती है वह कभी नहीं होगा, कभी नहीं होगा। मैं तो तुम्हें तीन तलाक़ें दे चुका जिनके बाद कोई रुजू नहीं होता क्योंकि तेरी उम्र थोड़ी है और तू मंदबुद्धि है। यह तमसीली भाषा में दुनिया से सम्बोधित हैं क्योंकि तेरी उम्र थोड़ी है और तू मंदबुद्धि है। जबकि यात्रा की सामग्री कम है और यात्रा लम्बी है और रास्ता भयानक है। आपके गुणों के बारे में यह सारी बातें बताईं तो यह सुनकर अमीर मुआविया रो पड़े और कहा। अल्लाह अबुल्हसन पर रहम करे। ख़ुदा की क़सम वह ऐसे ही थे। हे ज़रार अली की वफ़ात पर तुम्हें कैसा दुख हुआ? ज़रार ने कहा उस औरत के दुख जैसा जिसके बच्चे का उस की गोद में ही वध कर दिया जाए।

(अल्इस्तेयाब फ़ी मारेफ़तिल् सहाबा,भाग 3 पृष्ठ 1107-1108 वर्णन अली बिन अबी तालिब, दारुल जलील बेरूत 1992 ई.)

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के क़ज़ा के फ़ैसले बहुत मशहूर हैं। उनमें से कुछ वर्णन करता हूँ जो हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने वर्णन फ़रमाए हैं। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन फ़रमाते हैं कि

"हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माने की एक घटना जो तिबरी ने लिखी है, बताता है कि इस्लाम के आरंभ से इस सावधानी पर अमल होता चला आया है। वह घटना इस तरह है कि अदल बिन उसमान वर्णन करते हैं।" हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने उस की सारी अरबी इबारत ही लिखी है मैं इस वक़्त वह अरबी की इबारत छोड़ देता हूँ। इंशा अल्लाह ख़ुत्बा छपेगा तो उस वक़्त यह लिखी जाएगी।

(رَاَیْتُ عَلِیًّا عَمَّ خَارِجًا مِنْ هَمْدَانَ فَرَاٰی فِئَتَیْنِ تَقْتَلَانِ فَفَرَّقَ بَیْنَهُمَا

ثُمَّ مَضٰی فَسَمِعَ صَوْتًا یَا غَوْثًا بِاللّٰهِ فَخَرَجَ یَحُضُّ نَحْوَهٗ حَتّٰی سَمِعْتُ خَفْقَ نَعْلِهٖ

وَهُوَ یَقُوْلُ اَتَاکَ الْغَوْثُ فَاِذَا رَجُلٌ یُلَازِمُ رَجُلًا فَقَالَ یَا اَمِیْرَ الْمُؤْمِنِیْنَ

بِعْتُ مِنْ هٰذَا ثَوْبًا بِتِسْعَةِ دَرَاهِمَ وَشَرَطْتُ عَلَیْهِ اَنْ لَّا یُعْطِیَنِیْ مَغْمُوْرًا

وَلَا مَقْطُوْعًا وَکَانَ شَرْطُهُمْ یَوْمَئِذٍ فَاَتَیْتُهٗ بِهٰذِهِ الدَّرَاهِمِ لِیُبَدِّلَهَا لِیْ فَاَبٰی

فَلَزِمْتُهُ فَلَطَمَنِيْ فَقَالَ اَبْدِلْهُ فَقَالَ بَيِّنَتُكَ عَلَى اللَّطْمَةِ فَاَتَاهُ بِالْبَيِّنَةِ فَاَقْعَدَهُ ثُمَّ قَالَ دُوْنَكَ فَاقْتَصَّ فَقَالَ اِنِّيْ قَدْ عَفَوْتُ يَا اَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ قَالَ اِنَّمَا اَرَدْتُ اَنْ اَحْتَاطَهُ فِيْ حَقِّكَ ثُمَّ ضَرَبَ الرَّجُلَ تِسْعَ دُرَّاتٍ وَقَالَ هٰذَا حَقُّ السُّلْطَانِ)इस का अनुवाद यह है कि "मैंने देखा कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु हमदान से बाहर निवासी थे कि उसी मध्य आपने दो गिरोहों को आपस में लड़ते हुए देखा और आपने उन में सुलह करा दी लेकिन अभी थोड़ी दूर ही गए थे कि आपको किसी व्यक्ति की आवाज़ आई कि कोई ख़ुदा के लिए मदद को आए। अत: आप तेज़ी से उस आवाज़ की तरफ़ दौड़े यहाँ तक कि आपके जूतों की आवाज़ भी आ रही थी और आप कहते चले जाते थे कि मदद आगई। मदद आ गई। जब आप उस जगह के क़रीब पहुंचे तो आपने देखा कि एक आदमी दूसरे से लिपटा हुआ है। जब उसने आपको देखा तो निवेदन किया कि हे अमीरुल मोमनीन ! मैंने इस व्यक्ति के पास एक कपड़ा नौ दिरहम का बेचा था और शर्त यह थी कि कोई रुपया" अर्थात जो दिरहम है वह "मशकूक या कटा हुआ न हो और उसने (ख़रीदने वाले ने) इस को मंज़ूर कर लिया था लेकिन आज जो मैं इस को कुछ थोड़े रुपय देने के लिए आया" (उसने जब मुझे रुपय दिया तो उन दिरहम में से कुछ नाक़िस थे। जब मैं उनको नाक़िस रुपय देने के लिए आया) "तो उसने बदलने से इन्कार कर दिया। जब मैं पीछे पड़ा तो उसने मुझे थप्पड़ मारा। आपने खरीदने वाले से कहा कि इस को रुपय बदल दे।'' जो ख़रीदार था उस को यह कहा उस को रुपय बदल के दो। रक़म बदल के दो" फिर दूसरे व्यक्ति से कहा कि थप्पड़ मारने का सबूत पेश कर। जब उसने सबूत दे दिया तो आपने मारने वाले को बिठा दिया और उस से कहा कि इस से बदला ले। उसने कहा हे अमीरुल मोमनीन मैंने उस को माफ़ कर दिया है। आपने फ़रमाया तू ने तो इस को माफ़ कर दिया परन्तु मैं चाहता हूँ कि तेरे हक़ में एहतियात से काम लूं। मालूम होता है वह व्यक्ति सादा था और अपने नफ़ा नुक़्सान को नहीं समझ सकता था।" हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु लिख रहे हैं। "और फिर उस व्यक्ति को'' जिसने थप्पड़ मारा था उस व्यक्ति को" 9 कोड़े मारे। और फ़रमाया उस व्यक्ति ने तो तुझे माफ़ कर दिया था परन्तु यह सज़ा हुकूमत की तरफ़ से है।" (तफ़सीरे कबीर, भाग 2 पृष्ठ 362-363)

फिर एक और घटना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन फ़रमाते हैं कि "एक उच्च कोटि की उदाहरण हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के अनुकरण से मिलती है। आपने एक बार देखा कि एक व्यक्ति ने दूसरे को पीटा है। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने उस को रोका और मज़रूब को कहा कि अब तुम उस को मारो। परन्तु मज़रूब ने कहा कि में इस को माफ़ करता हूँ। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने समझ लिया कि डर के मारे उसने उसे मारने से इन्कार किया है क्योंकि वह मारने वाला बड़ा प्रभावी व्यक्ति था। इस लिए आपने फ़रमाया तुमने अपना ज़ाती हक़ माफ़ कर दिया है परन्तु मैं अब क़ौमी हक़ को इस्तिमाल करता हूँ और उसे उसी क़दर पिटवा दिया जिस क़दर कि उसने दूसरे कमज़ोर व्यक्ति को पीटा था।"

(तफ़सीरे कबीर, भाग 4 पृष्ठ 331)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि "हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की घटना है कि उनका एक मुकद्दमा एक इस्लामी मजिस्ट्रेट के सामने पेश हुआ तो मजिस्ट्रेट ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु का कुछ लिहाज़ किया। आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया यह पहली बे इंसाफ़ी है जो तुम ने की है "कि मेरा लिहाज़ कर रहे हो'' मैं और यह इस वक़्त बराबर हैं।"

(खुत्बाते महमूद ,भाग 16 पृष्ठ 516)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के फ़ज़ायल वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं

"क्या आप क़ौम के सबसे उत्तम बोलने वाले पर्वक्ता और उन लोगों में से न थे जो शब्दों में जान डाल देते हैं? अपनी बलाग़त और वर्णन शैली के ज़ोर से तथा श्रोताओं के लिए अपने आकर्षक प्रभाव से लोगों को अपने निकट जमा कर लेना आप के लिए केवल एक घंटे बल्कि इस से भी कमतर वक़्त का काम था।'' (सिर्रुल खिलाफ़ा, रुहानी खज़ायन भाग 8 पृष्ठ 350 सिर्रुल खिलाफ़ा उर्दू अनुवाद, पृष्ठ 89-90 हाशिया प्रकाशन नज़ारत इशाअत सदर अंजुमन अहमदिया पाकिस्तान रब्वाह)

फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं

"मैं तो यह जानता हूँ कि कोई व्यक्ति मोमिन और मुस्लमान नहीं बन सकता जब तक अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु, उमर रज़ियल्लाहु अन्हु, उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु, अली रज़ियल्लाहु अन्हु का सा रंग पैदा न हो। वह दुनिया से मुहब्बत नहीं करते थे बल्कि उन्होंने अपनी ज़िन्दगियां ख़ुदा तआला की राह में वक़्फ़ की हुई थीं।" (लैक्चर लुधियाना,रुहानी ख़ज़ाइन, भाग 20 पृष्ठ 294)

फिर आप हैं कि "ख़वारिज हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को फ़ासिक़ क़रार देते हैं और बहुत से कार्य संयम के विरुद्ध उनकी ओर संलंग करते हैं बल्कि हिलया इमान से भी उनको कम समझते हैं।" अर्थात यह समझते हैं कि उनमें तो ईमान ही नहीं था। यह समझते हैं कि ईमान के ज़ेवर से ख़ाली थे। "तो इस जगह स्वाभाविक यह प्रश्न पैदा होता है कि जबकि सिद्दीक़ के लिए तक़्वा (संयम) और अमानत और दयानत शर्त है तो यह समस्त बुज़ुर्ग और उच्च स्तर के इन्सान जो रसूल और नबी और वली हैं क्यों ख़ुदा तआला ने उनके हालात को लोगों की नज़र में ओझल कर दिया।'' क्यों यह लोग जो थे उनको सही तरह समझ नहीं आई क्यों उनकी जो हालत थी, उनका जो सारा जीवन था संदिग्ध था? "और वह उन के कर्म और कथनों को समझने से इस क़दर असहाय रहे कि उनको तक़्वा (संयम) की सीमा और अमानत और दयानत से बाहर समझा और ऐसा ख़्याल कर लिया कि मानो वे लोग अत्याचार करने वाले और हराम माल खाने वाले और निर्दोष का ख़ून करने वाले और झूठ बोलने वाले और वादा तोड़ने वाले और नफ़सपरसत और अपराधी थे हालाँकि दुनिया में बहुत से ऐसे लोग भी पाए जाते हैं कि न रसूल होने का दावा करते हैं और न नबी होने का और न अपनी ओर से वली और इमाम और ख़लीफ़तुलमुस्लिमीन कहलाते हैं लेकिन इसके होते हुए कोई आरोप उनके चाल चलन और ज़िंदगी पर नहीं होता तो इस प्रश्न का उत्तर यह है कि ख़ुदा तआला ने ऐसा किया ताकि अपने ख़ास मक़बूलों और महबूबों को बुरे कष्ट देने वालो से जिनकी आदत बद-गुमानी है छुपा कर रखे जैसा कि स्वयं अस्तित्व उस का इस प्रकार की कुधारणा करने वालों से छुपा हुआ है।"

(तिरयाकुल-क़ुलूब , रुहानी ख़ज़ाइन, भाग 15 पृष्ठ 422 हाशिया)

अर्थात यह कहने वाले स्वयं बुरे हैं और कुधारणा करने वाले हैं और जिस तरह अल्लाह तआला ने स्वयं अपने आपको छुपा कर रखा हुआ है और लोग अल्लाह तआला पर कुधारणा करते हैं इसी तरह उस के जो प्रिय हैं उन पर भी ख़ुद यह बुरे लोग आरोप में जल्दी करने वाले हैं यही लोग असल में ऐसे हैं जिनमें तक़्वा (संयम) नहीं है और यह संयमियों पर आरोप लगाते हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

"इसमें कणभर सन्देह नहीं कि हज़रत अली रज़ि॰ (सच के) अभिलाषियों का आशा-स्थल और दानशील लोगों का अद्वितीय नमूना तथा (ख़ुदा के) बन्दों के लिए ख़ुदा की हुज्जत थे तथा अपने युग के लोगों में उत्तम इन्सान और देशों को रोशन करने के लिए अल्लाह के नूर थे। परन्तु आप की ख़िलाफ़त का दौर अमन और शान्ति का युग न था बल्कि उपद्रवों, अत्याचारों और ज़ुल्म के सीमा से अधिक बढ़ जाने की तीव्र हवाओं का युग था। जन सामान्य आप की और इब्ने अबी सुफ़ियान की ख़िलाफ़त के बारे में मतभेद करते थे और उन दोनों की ओर आश्चर्य-चकित व्यक्ति के समान टकटकी लगाए बैठे थे तथा कुछ लोग इन दोनों को आकाश के फ़र्क़द (पूर्वी ध्रुव में निकलने वाले दो सितारे जो शाम से सवेरे तक दिखाई देते हैं छुपते नहीं।) नामक दो सितारों के समान समझते थे। और दोनों को श्रेणी में एक समान समझते थे परन्तु सच यह है कि हक़ (अली) मुर्तज़ा रज़ि॰ के साथ था। और जिसने आप के काल में (दौर में) आप से युद्ध किया तो उसने विद्रोह और उद्दण्डता की। परन्तु आप की ख़िलाफ़त उस अमन की चरितार्थ न थी जिसकी ख़ुश ख़बरी कृपालु ख़ुदा की तरफ़ से दी गई थी बल्कि (हज़रत अली) मुर्तज़ा रज़ि॰ को अनेक विरोधियों की ओर से कष्ट दिया गया और आप की ख़िलाफ़त विभिन्न प्रकार के उपद्रवों के नीचे कुचली गई, आप पर अल्लाह का बड़ा फ़ज़्ल (कृपा) था परन्तु जीवन भर आप शोकग्रस्त और ज़ख़्मी दिल वाले रहे और पहले ख़लीफ़ों की तरह धर्म-प्रचार तथा शैतानों को पत्थरों से मार डालने पर समर्थ न हो सके बल्कि आप को क़ौम के कटाक्षों से ही फ़ुर्सत न मिली और आपको हर इरादे और इच्छा से वंचित किया गया। वे आप की सहायता के लिए एकत्र न हुए बल्कि आप पर निरन्तर अत्याचार करने पर एकत्र हो गए और कष्ट देने से न रुके बल्कि आप की रोक-टोक की और हर मार्ग में बैठे तथा आप बहुत धैर्यवान और नेक लोगों में से थे। परन्तु यह संभव नहीं कि हम उन की ख़िलाफ़त को इस (आयत-ए-इस्तिख़्लाफ़ वाली) ख़ुशख़बरी का चरितार्थ ठहराएं। क्योंकि आप की ख़िलाफ़त फ़साद, विद्रोह और क्षति के युग में थी।"

(सिर्रुल खिलाफ़ा, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 8 पृष्ठ 352-353 सिर्रुल खिलाफ़ा उर्दू अनुवाद, पृष्ठ 95-96 हाशिया प्रकाशन नज़ारत इशाअत सदर अंजुमन अहमदिया पाकिस्तान, रब्वा)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "यह अक़ीदा ज़रूरी है कि हज़रत सिद्दीक़ अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और हज़रत फ़ारूक़ उम्र

रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और हज़रत ज़ूनुरैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु सबके सब वाक़ई तौर पर धर्म में सच्चे थे।'' (मकतूबाते अहमद, भाग 2, पृष्ठ 151 पत्र नम्बर 2 पत्र बनाम हज़रत ख़ान साहब मुहम्मद अली ख़ान साहब प्रकाशन रब्वाह)

फिर आप हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के मुक़ाम और मर्तबा का वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं कि "आप"अर्थात हज़रत अली'' रज़ियल्लाहु अन्हु आप रज़ियल्लाहु अन्हु संयमी, पवित्र अन्त:करण तथा उन लोगों में से थे जो कृपालु ख़ुदा के यहां सर्वाधिक प्रिय होते हैं। और आप क़ौम के चुने हुए और युग के सरदारों में से थे। आप आधिपत्य रखने वाले ख़ुदा के शेर, कृपालु ख़ुदा के योद्धा, दानी, पवित्र, हृदय थे। आप ऐसे अद्वितीय बहादुर थे जो युद्ध के मैदान में अपना स्थान नहीं छोड़ते थे चाहे उन के मुकाबले में शत्रुओं की एक सेना हो। आप ने सम्पूर्ण आयु ग़रीबी में व्यतीत की और मानव जाति के संयम के पद की चरमसीमा तक पहुंचे। आप धन-दौलत प्रदान करने, लोगों के शोक और चिन्ताओं को दूर करने, तथा अनाथों, असहायों, और पड़ोसियों की देखभाल करने में प्रथम श्रेणी के मर्द थे। आप ने युद्धों में भिन्न-भिन्न प्रकार के वीरता के जौहर दिखाए थे। तीर और तलवार के युद्ध में आप से आश्चर्यजनक घटनाएं प्रकट होती थीं। इसके साथ-साथ आप अत्यन्त मृदुल भाषी और सरस-सुबोध वक्ता भी थे आप का बयान दिलों की गहराई में उतर जाता और तर्कों के प्रकाश से उसका चेहरा चमक जाता। आप भिन्न-भिन्न प्रकार की वर्णन शैलियों पर समर्थ थे और जो आप से इनमें मुकाबला करता तो उसे एक पराजित व्यक्ति की तरह आप से विवशता व्यक्त करनी पड़ती। आप हर ख़ूबी में और सरसता एवं सुबोधता की शैलियों में पूर्ण थे और जिसने आप की ख़ूबी का इन्कार किया तो उसने निर्लज्जता का मार्ग अपनाया। आप असहायों की हमदर्दी की तरफ़ प्रेरणा दिलाते और भाग्यतुष्ट लोगों तथा दरिद्रों को खाना खिलाने का आदेश देते। आप अल्लाह के सानिध्य प्राप्त बन्दों में से थे और इसके साथ-साथ आप फ़ुर्क़ान (हमीद) की मारिफ़त के जाम पीने वालों में पहले लोगों में से थे और आप को क़ुर्आन की बारीकियों को समझने में एक अदभुत समझ प्रदान की गयी थी। मैंने जागने की अवस्था में उन्हें देखा है न कि नींद में। फिर (उसी हालत में) आप ने अन्तर्यामी ख़ुदा की किताब की तफ़्सीर मुझे प्रदान की और फ़रमाया – "यह मेरी तफ़्सीर है और यह अब आप को दी जाती है। अत: आप को इस दिए जाने पर मुबारक हो।" जिस पर मैंने अपना हाथ बढ़ाया और वह तफ़्सीर ले ली और मैंने प्रदान करने वाले शक्तिमान ख़ुदा का शुक्र अदा किया और मैंने आप को पैदायश में संतुलित ओर स्वभाव में पुख़्ता और विनम्र व्यवहार करने वाला विनम्र स्वभाव, प्रकाशमान और रोशन पाया और मैं यह क़सम खाकर कहता हूं कि आप मुझ से बड़े प्रेम और मुहब्बत से मिले। और मेरे दिल में यह बात डाली गई कि आप मुझे और मेरी आस्था को जानते हैं और मैं अपनी आस्था और मत में शियों से जो मतभेद रखता हूं वह उसे भी जानते हैं परन्तु आपने किसी भी प्रकार की अप्रसन्नता एवं खिन्नता की अभिव्यक्ति नहीं की और न ही (मुझ से) विमुख हुए बल्कि वह मुझ से मिले और शुद्ध प्रेमियों की तरह मुझ से प्रेम किया और उन्होंने सच्चे, स्वच्छ दिल रखने वाले लोगों की भांति प्रेम को अभिव्यक्त किया। और आप के साथ हुसैन बल्कि हसन रज़ि॰ और हुसैन रज़ि॰ दोनों तथा सय्यिदुर्रुसुल ख़ातमुन्नबिय्यीन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी थे और उनके साथ एक अत्यन्त सुन्दर नेक, प्रतापी, मुबारक, सदाचारी, सम्माननीय, ज़ाहिर-व-बाहर साक्षात प्रकाश जवान सौम्य महिला भी थीं, जिन्हें मैंने शोक से भरा हुआ पाया, परन्तु वह उसे छुपाए हुए थीं। मेरे दिल में डाला गया कि आप फ़ातिमा अज़्हुज़ुरा रज़ि॰ हैं। आप मेरे पास आईं, मैं लेटा हुआ था। तो आप बैठ गईं और आप ने मेरा सर अपनी रान पर रख लिया और प्रेम को अभिव्यक्त किया। मैंने देखा कि वह मेरे किसी ग़म (शौक) के कारण शोकग्रस्त दुखित हैं और बच्चों के कष्टों के समय मांओं की तरह प्रेम, मुहब्बत और बेचैनी व्यक्त कर रही हैं। फिर मुझे बताया गया कि धर्म के संबंध में उनके नज़दीक मेरी हैसियत बेटे के समान है और मेरे दिल में विचार आया कि उनका शोकग्रस्त होना इस बात पर संकेत है कि मैं क़ौम, देशवासियों और शत्रुओं से अत्याचार देखूंगा। फिर हसन और हुसैन दोनों मेरे पास आए और मुझ से भाइयों की तरह प्रेम-व्यक्त करने लगे तथा हमदर्दी करने वालों के समान मुझ से मिले। और यह कश्फ़ जागने की अवस्था के कश्फ़ों में से था। इस पर कई वर्ष गुज़र चुके हैं, और मुझे हज़रत अली रज़ि॰ तथा हज़रत हुसैन रज़ि॰ के साथ एक उत्तम अनुकूलता है और उस अनुकूलता की वास्तविकता को पूरब और पश्चिम के प्रतिपालक के अतिरिक्त कोई नहीं जानता। और मैं हज़रत अली रज़ि॰ और आप के दोनों बेटों से प्रेम करता हूं तथा जो उन से शत्रुता रखे उस से मैं शत्रुता रखता हूं। इसके बावजूद मैं ज़ुल्म-व-सितम करने वालों में से नहीं और यह मेरे लिए संभव नहीं कि मैं उस से मुंह फेरूं जो अल्लाह ने मुझ पर प्रकट किया और न ही मैं सीमा का अतिक्रमण करने वालों में से हूं। यदि तुम स्वीकार न करो तो मेरा कर्म (अमल) मेरे लिए और तुम्हारा कर्म (अमल) तुम्हारे लिए है। और अल्लाह हमारे और तुम्हारे बीच अवश्य फैसला करेगा और वह फैसला करने वालों में से सबसे अच्छा फैसला करने वाला है"

(सिर्रुल खिलाफ़ा, रुहानी ख़ज़ाइन, भाग 8 पृष्ठ 358-359 सिर्रुल खिलाफ़ा उर्दू अनुवाद,पृष्ठ 108 से 112 प्रकाशन नज़ारत इशाअत सदर अंजुमन अहमदिया पाकिस्तान, रबवाह)

यहां अब हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का वर्णन ख़त्म होता है इंशाअल्लाह आइन्दा आगे शुरू होगा।

इस वक़्त में यह भी एक ऐलान करना चाहता हूँ कि इंशा अल्लाह नमाज़ों के बाद में एक नया टीवी चैनल लॉन्च करूँगा जो एम.टी.ए. घाना के नाम से चौबीस घंटे ब्रॉडकास्ट (broadcast) होगा। घाना में वहाब आदम स्टूडियो 2017 ई में क़ायम हुआ था और अब्दुल वहाब आदम साहिब मरहूम अमीर मिशनरी इंचार्ज घाना थे उनके नाम पर इस का नाम रखा गया था। बहरहाल एम.टी.ए अफ्रीक़ा चैनल्ज़ के मौजूदा प्रोग्रामों का साठ फ़ीसद हिस्सा इस स्टूडियो में तैयार होता है। स्टूडियो में 17 फ़ुल टाइम (full time) कर्मचारी हैं और 60 से ज़्यादा सेवक भी हैं जो मुख़्तलिफ़ विभागों में प्रशिक्षित हैं। वहाब आदम स्टूडियो घाना के जदीद तरीन स्टूडीयोज़ में से एक है और इस में कई बेहतरीन सहूलियात मुहय्या हैं। विभिन्न मीडिया तंज़ीमें और ब्रॉडकास्टर तर्बीयती मक़ासिद और काम के अनुभव के लिए अपने अमले को इस स्टूडियो में भेजते हैं। स्टूडियो ने बहुत से लाइव प्रोग्राम प्रसारित किए हैं जिनमें अफ्रीक़ा का पहला क़ुरआन करीम की तिलावत का मुक़ाबला और रमज़ानुल मुबारक का प्रसारण शामिल हैं। एम.टी.ए. घाना के नाम से अब एक नया चैनल लॉन्च किया जा रहा है। यह घाना में डिजीटल प्लेटफार्म पर चौबीस घंटे प्रसारण वाला नया देश का टीवी चैनल होगा। एम.टी.ए. घाना सैटेलाइट डिश की ज़रूरत के बिना एक आम एरीयल (aerial) के द्वारा देखा जा सकेगा। इस का मतलब यह है कि घाना के लोग आम एंटीना पर भी आसानी इस चैनल तक रसाई हासिल कर सकते हैं। यह चैनल उसी जगह, उसी लोकेशन पर दस्तयाब होगा जहां घाना के बड़े बड़े चैनल मौजूद हैं और इस तरह देश के दूर दराज़ में लाखों घरों तक उस की पहुँच होगी और समस्त इलाक़े साउथ से लेकर नॉर्थ तक यह कवर (cover)करेगा। इंशा अल्लाह। घाना की विभिन्न भाषाओं में भी वहाब आदम स्टूडियो से प्रोग्राम तैयार किए जाऐंगे जिनमें अंग्रेज़ी, चोई (twi) गा(ga) हाओसा और दूसरी भाषाएँ शामिल हैं। चैनल की ट्रांसमिशन और शेड्यूलिंग का काम वहां लज्ना की रज़ाकार और दीगर टीमें करेंगी। अख़लाक़ी और तालीमी और तर्बीयती प्रोग्राम बनाए जाऐंगे। इस हवाले से इस्लाम की सही और ख़ूबसूरत शिक्षा से लोगों को परिचित किया जाएगा। इंशा अल्लाह तआला। इस चैनल के द्वारा एम.टी.ए. घाना मुल्क में डीजिटल प्लेटफार्म पर इस्लामी शिक्षाओं के लिए मुकम्मल तौर पर वक़्फ़ अकेला चैनल होगा। इंशा अल्लाह तआला।

एक जगह हमारे मुख़ालिफ़ीन रास्ता बंद करने की कोशिश करते हैं अल्लाह तआला दूसरी जगह और कई रास्ते खोल देता है। यह हैं अल्लाह तआला के जमाअत पर फ़ज़ल। इंशा अल्लाह तआला जो बंद रास्ते हैं वह भी अपने वक़्त पर खुलेंगे। इंशा अल्लाह। लेकिन अल्लाह तआला हमें साथ ही साथ ख़ुशी के सामान भी पहुंचा देता है। तो यह चैनल इंशा अल्लाह तआला इस देश को कवर करेगा बल्कि पड़ोसियों के कुछ इलाक़ों को भी शायद कवर करे। इंशा अल्लाह जैसा कि मैंने कहा जुमआ के बाद, नमाज़ों के बाद में इस का उद्घान करूँगा।

दूसरी बात जैसा कि मैं आजकल तवज्जा दिला रहा हूँ । पाकिस्तान और अल-जज़ाइर के जेल में बंद लोगों के लिए खासतौर पर दुआ करें अल्लाह तआला उनकी रिहाई के सामान पैदा फ़रमाए। पाकिस्तान के उमूमी हालात के लिए भी दुआ करें। अल्लाह तआला अहमदियों को वहां सुकून की ज़िंदगी गुज़ारने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। अहमदियत के विरोधियों को अक़्ल और समझ दे। अगर नहीं है तो फिर जो भी अल्लाह तआला ने उनसे सुलूक करना है वह करे और जल्द हम उनसे नजात पाने वाले बनें। और हमको, खासतौर पर पाकिस्तान के अहमदियों को ख़ुद भी आजकल नवाफ़िल और दुआओं और सदक़ात पर-ज़ोर देना चाहिए। अल्लाह तआला उनको अपनी हिफ़्ज़ और अमान में रखे।

(अलफ़ज़ल इंटरनेशनल 7 अगस्त 2020 पृष्ठ 5 से 10)

☆ ☆ ☆ ☆

पृष्ठ 2 का शेष आम आदमी जब यह कहता है कि मेरा यह धर्म है तो इस का अर्थ यह होता है कि मैं इस चीज़ को मानता हूँ इस फ़िर्क़ा को मानता हूँ। लेकिन वहां जब धार्मिक लीडर बन के कोई कहता है कि मेरा यह धर्म है तो अर्थ है कि तुम मेरे पास आ जाओ इस दूसरे मौलवी को छोड़ दो। यह मेरी मस्जिद और यह मेरा धर्म है। वह तुम्हारी मस्जिद और तुम्हारा धर्म है और फिर एक दूसरे को गालियां दो और एक दूसरे के पीछे नमाज़ें नहीं पढ़ो।

काफ़िर तो यह हर एक दूसरे को कहते हैं। किसी को काफ़िर कहना किसी का हक़ नहीं। जिसने कलिमा पढ़ा वह मुस्लमान है। हाँ जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बात को नहीं मानता आप की पेशगोइयों के अनुसार आने वाले मसीह और महदी अलैहिस्सलाम को नहीं मानता तो वह बहरहाल इन्कार करने वाला है। और इस प्रकार कुफ्र का अर्थ इन्कार करना भी होता है अर्थात किसी भी ज़ात का इन्कार करना।

जर्नलिस्ट ने प्रश्न किया, जमाअत अहमदिया को बतौर एक इस्लाही सिलसिला देखा जाता है। जमाअत अहमदिया के संस्थापक ने कौन सी इस्लाह फ़रमाई।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : प्रश्न यह है कि यह तो आपकी definition है कि इस्लाही सिलसिला के तौर पर देखा जाता है। न तो अल्लाह ने यह कहा न उसके रसूल ने यह कहा कि केवल इस्लाही सिलसिला है। अल्लाह तआला ने सूरत जुम्आ में यह फ़र्मा दिया है कि जो दीन आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने क़ायम किया है उस दीन पर क़ायम रहने वाले आख़रीन में से कुछ लोग होंगे। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि यदि ईमान सुरय्या पर भी पहुंच गया हो तो उन लोगों में से कुछ लोग इस को वापस ले आएँगे अर्थात मसीह मौऊद को मानने वाले वापस लाएँगे। तो इस तरह जब दीन को सही तौर पर क़ायम कर दें तो फिर दीन के दो बुनियादी काम होते हैं जैसे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है वह दो काम यह हैं कि प्रथम बंदे को ख़ुदा से मिलाना दूसरा इन्सानों के हुक़ूक़ अदा करना। जब इन्सान ख़ुदा से मिलता है और ख़ुदा की लिए प्रत्येक काम करने का प्रयास करता है तो वह बुराई कर ही नहीं सकता।

अल्लाह तआला क़ुरआन शरीफ़ में फ़रमाता है कि ग़रीबों का ख्याल रखो, यतीमों का ख्याल रखो, मुसाफ़िरों का ख्याल रखो, अपने पड़ोसियों का ख्याल रखो, अपनी बीवियों का ख्याल रखो, अपने बच्चों की तर्बीयत सही करो और इस तरह बेशुमार आदेश हैं। तो यह ध्यान रखना यही है कि अपना सुधार करो और उनका सुधार करो और यह उस समय तक नहीं कर सकते जब तक वास्तव में अपने ख़ुदा को नहीं मानोगे। जब इन्सान किसी काम को करता है जैसे इस मुल्क में बहुत सारे लोग चोरी से बचते हैं या डरते हैं या किसी इलाक़े में नहीं जाते तो इस लिए ऐसा करते हैं कि उन्हें पुलिस से या क़ानून से ख़ौफ़ है। यदि आप यहां उन्हें खुली इजाज़त दे दें और कोई क़ानून न हो कोई ला एन आर्डर न हो तो फिर यही होगा कि प्रत्येक के अख़लाक़ भी गिर जाऐंगे। तो जब अल्लाह तआला से सम्बन्ध होगा और अल्लाह तआला के लिए ही इन्सान सब कुछ कर रहा होगा उसके हक़ अदा कर रहा होगा तो फिर उसके हुक्म के अनुसार दूसरों के हुक़ूक़ भी अदा करेगा। तो यह इस्लाही सिलसिला इस लिए है कि हम मानते हैं कि हमारा दीन एक कामिल और मुकम्मल दीन है। वह अल्लाह तआला से भी मिलाता है और संसार में लोगों के हुक़ूक़ भी है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला ने फ़रमाया: ला एन आर्डर पर मुझे याद आया कि पिछले दिनों पाकिस्तान से किसी ने मुझे एक अख़बार की कटिंग भेजी थी जिसमें एक जलूस निकल रहा है और उन्होंने हाथों में सैमी आटो मेटिक राइफ़लें पकड़ी हुई हैं और वह प्रोटेस्ट कर रहे और नीचे Caption यह है कि यह घोटकी के इलाक़े के डाकू हैं जो यह protest कर रहे हैं कि पुलिस हम पर अत्याचार करती है और हमारी तो इतनी कमाई नहीं लेकिन यह हम में से प्रत्येक महीना या दो महीने का एक एक लाख ले रही है। और पुलिस के इस पी साहिब बजाए इस के कि उनको पकड़ें और जेल में डालें कि तुम जो protest कर रहे हो कि तुम लोगों को लूटते हो और फिर तुम अपनी सफ़ाई नहीं प्रस्तुत कर रहे कि हम लूटते नहीं बल्कि इक़रार कर रहे हैं कि हमारी लूट का माल इतना नहीं जितना पुलिस हमसे ले रही है। तो तुम लूट तो रहे हैं चाहे थोड़ा या ज़्यादा, इस लिए सबको जेल में बंद करने की बजाए, एस पी साहिब बयान दे रहे हैं कि ये डाकू ग़लत बयान दे रहे हैं हम उनसे इतने पैसे नहीं लेते। तो जब ला एन आर्डर की यह स्थिति हो जाए तो फिर इस्लाह क्या होनी है।

हम जो इस्लाह की बात करते हैं तो वह यह है कि इस्लाम के दो उसूल हैं ख़ुदा की इबादत करना, उस का हक़ अदा करना और बंदों के हुक़ूक़ अदा करना, जब बंदों के हुक़ूक़ अदा होंगे तो वही इस्लाही वस्तु बन जाएगी। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला ने फ़रमाया, मैं पहले भी बता चुका हूँ बल्कि यहीं एक दफ़ा किसी जगह से प्रोफ़ैसर साहिब आए थे उनको भी बताया था कि एक मर्तबा मौज़े तुंग के ज़माना में पाकिस्तान के मिनिस्टरज़ का दल चीन के दौरे पर गया और उसने पूछा कि आपने बहुत डिवेलपमैंट कर ली है,आपने इतना रीफार्म किस तरह कर लिया है तो उसने कहा कि तुम मुझसे क्यों पूछते हो जाओ और अपने रसूल की किताब पढो उस में खोल कर सारी बातें लिखी हैं। तुम उन पर अमल करलो तो तब सब ठीक हो जाएगा। तो क़ुरआन करीम इस्लाही किताब है। धर्म के साथ इस्लाह भी है।

अत: असल बात यह है कि जब हम हक़ीक़ी मुस्लमान बन जाऐंगे तो हमारी इस्लाह भी हो जाएगी और दूसरों की इस्लाह करने के काबिल भी हो जाऐंगे। दो दिन पूर्व आकिन में आपके कई मेंबर आफ़ पार्लियामेंट और अन्य लोगों ने कई बातें कीं तो मैंने इन्ही बातों को क़ुरआन के हवाले से बतला दिया तो इस पर कमनटस जो मुझे मिले कि यह शिक्षा ऐसी आला है कि प्रत्येक को उसे अपनाना चाहिए। अत: यही इस्लाह है जो हमने करनी है और यही इस्लाह है जो इस्लाम करता है

जर्नलिस्ट ने प्रश्न किया, मुसलमानों के अंदर अहमदिया जमाअत ही है जो कहती है कि जिसका इंतिज़ार था वह आ गया।

इस प्रश्न के उत्तर में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया

प्रश्न यह है कि यदि सारे ही कहने लग जाएं तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम यह क्यों फ़रमाते कि एक फ़िर्क़ा नाजी है और दूसरे नारी हैं। यह होना था और यह भविष्यवाणी भी पूरी होनी थी। वह लोग जो यह realize कर रहे हैं जिसने आना था आ गया है और इस्लाम की असल शिक्षा यही है तो ऐसे लोग अहमदी हो रहे हैं। लन्दन का LBC रेडियो है। उसकी एक बड़ी प्रसिद्ध लेखक ने मेरा इंटरव्यू किया था। शायद आपने भी सुन लिया हो, उसको मैंने यही कहा था कि जब यहां से दस आदमी ISIS में जाते हैं तो तुम उसका कितना प्रोपेगंडा करते हो और अख़बारों में इश्तिहार देते हो और जो लाखों आदमी अपनी इस्लाह करके अम्न पसंद होने के लिए जमाअत में प्रत्येक वर्ष शामिल होते हैं उनका तुम अख़बारों में कोई वर्णन नहीं करते। तुम जो कहती हो कि तुम बड़ी इंसाफ़ पसंद हो तो हमारा जलसा आ रहा है इस में बैअतों का ऐलान होगा तुम उनकी रेडियो पर ख़बर देना फिर मैं देखूँगा कि तुम कितनी इन्साफ़ पसंद हो

अत: भविष्यवाणी के अनुसार यह तो होना था इसी लिए वह लोग जो यह realize कर रहे हैं वे शामिल भी हो रहे हैं। अब आपके माता पिता, बाप दादे भी तो किसी ज़माना में किसी कारण से ही अहमदियत में शामिल हुए थे। यदि यह कहा जाए कि एक मिनट में ऐसा हो जाए तो ऐसा नहीं हुआ करता। कुछ दफ़ा तब्लीग़ के माध्यम और कुछ दफ़ा निशानात के माध्यम से लोग शामिल होते हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भविष्यवाणी फ़रमाई कि ताऊन की महामारी फूटेगी, भूकम्प आएँगे और ये मेरे ज़माने के निशानात हैं और फिर ये सब आए भी तो इस में masses (गिरोहों) की सूरत में लोग जमाअत में शामिल हुए। ताऊन के बाद रोज़ाना चार सौ पाँच सौ बैअतें होती थीं। तो इस लिए लोग शामिल होते थे। अभी भी जहां-जहां निशानात देखते हैं वहां होते हैं। अफ्रीक़ा की रिपोर्टें आती हैं। कई बार में वर्णन भी कर दिया करता हूँ। लोग निशान देखते हैं और पूरे का पूरा गांव अहमदी हो जाता है। दो-दो सौ चार चार-सौ घर अहमदी हो जाता है। दो-चार सौ घर का अर्थ है हज़ार 12 सौ आदमी। कभी कभार छोटी छोटी आबादियां हैं छोटे क़स्बे हैं, टाउन हैं सब अहमदी हो जाते हैं। अत: शामिल हो रहे हैं एक दिन में तो संसार ने क़बूल नहीं कर लेना। इस्लाम भी संसार में एक दिन में तो नहीं फैला था।

जर्नलिस्ट ने प्रश्न किया कि आप क्या समझते हैं कि ग़लबा जिसकी भविष्यवाणी है यह तब्लीग़ के माध्यम से होगा या आप कहते हैं किसी catastrophical event (क़ुदरती तबाही या जंग के माध्यम से होगा।)

इस प्रश्न के उत्तर में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया

इस प्रश्न के जवाब में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया

सवाल यह है कि तब्लीग़ तो हमारा काम है। यही आँहज़रत सल्लल्लाहो को अल्लाह तआला ने क़ुरआन मजीद में फ़रमाया है कि तब्लीग़ का हुक्म तुझ पर नाज़िल किया गया है। अत: तब्लीग़ तो करनी है लेकिन यदि तब्लीग़ के बाद दूसरे अत्याचार पर खड़े हो जाते हैं तो फिर निशान भी नाज़िल होते हैं और ये विरोधी लोग इन चीज़ों को मानते हैं। अभी पाकिस्तान में जब सैलाब आया था, भूकम्प आए थे तो ग़ैर अहमदी मौलवियों ने स्वयं कहा था कि यह अल्लाह तआला का अज़ाब है जो हमारे ऊपर

आया है और हमें सोचना चाहिए कि हम कहाँ ग़लत हैं लेकिन यह भी साथ कह दिया कि क़ादियानियों की बात नहीं माननी। यदि बात नहीं माननी तो फिर अज़ाब ही क्यों आने हैं?

अत: अल्लाह तआला ने हर चीज़ का समय रखा हुआ है। तब्लीग़ हमारा काम है दुआ हमारा काम है और इसी से यह ग़लबा होना है और यदि इस से यह नहीं मानेंगे तो कुछ जगहों पर फिर अज़ाब भी आते हैं और अज़ाब उन्हें ध्यान दिलाते हैं। इस लिए मैं जामिया के लड़कों को यही कहा करता हूँ कि हमारा काम है तब्लीग़ करना और लोगों को बताना है कि यह हक़ीक़ी रास्ता है। यदि इस ओर नहीं आओगे तो अल्लाह तआला का अज़ाब भी आ सकता है

जर्नलिस्ट ने प्रश्न किया कि , ओबामा ने state of the union में एक तक़रीर के यात्रान कहा कि no challenge is a greater threat than to our future generation than climate change आपका इस बारे में क्या दृष्टिकोण है?

इस प्रश्न के जवाब में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया

इस के बाद एक politician ने और एक सैनेटर ने एक और ब्यान भी दे दिया था कि यह बात उचित नहीं है। क्लाइमेट चेंज को ले के बैठे हुए हो। इस समय इस से बड़ी थ्रेट तुम्हारा वह अत्याचार है जो तुम लोग एक दूसरे के विरुद्ध कर रहे हो। क्लाइमेट चेंज के बारे में तो जो साइंटिस्ट हैं और मौसम के विद्वान हैं वह तो यह कहते हैं कि कुछ सालों के बाद कई decades के बाद एक चेंज आता है। north pole और इस तरह के एरिया इत्यादि में जो बर्फ़ जमी हुई है। पहले भी ऐसा हुआ था कि वह पिघल गई थी। फिर दुबारा जमनी शुरू हुई। प्रश्न यह है कि एक क्लाइमेट चेंज तो है लेकिन इस के पीछे देखें कि अमरीका का क्या उद्देश्य है। उन लोगों का जो हर वर्णन होता है इस को केवल उसी सीमा तक सीमित न रखा करें सोच कर देखा करें। एक दलील यह दी जाती है कि आपकी जो कार्बन इमीशन इत्यादि है इस के कारण से बहुत सारी तब्दीलियां पैदा हो रही हैं। मौसम में गर्मी पैदा हो रही है जिसकी कारण से ozon layer में दूरी पैदा हो गई है या फट गई। यह लम्बी कहानी सुनाई जाती है इस लिए हमें अपनी इस चीज़ पर काम करना चाहिए और अमरीका आज ऐलान करता है कि हम कम कर देंगे। चाइना कहता है कि मैं तुम्हारी होशियारी समझता हूँ। तुमने तरक़्क़ी की थी मेरे से सौ वर्ष पहले और ये सब चीज़ें तुमने हवा में छोड़ीं। अब मैं जब तक सौ वर्ष तक इस स्थान पर नहीं पहुंचता और इतनी तरक़्क़ी नहीं कर लेता कि तुम्हारे मुक़ाबला में आकर तुम्हें नीचे नहीं गिराता , मैं इस सन्धि को मानूंगा नहीं। अभी जो क़सूर होगा तुम्हारा होगा और फिर सौ वर्ष के बाद मेरा होगा। असल बात यह है कि संसार develop हो रहा है वह develop न हो और आप उनके नीचे लगे रहें। जो देश develop हो चुके हैं वे कहते हैं हमारे नीचे लगे रहें। अमरीका कहता है कि यदि चाइना और इंडिया ऊपर आ गए तो हमारी economy ख़त्म हो जाएगी। इस लिए क्लाइमेट चेंज का शोर मचा दिया है। सवाल यह है कि क्या क्लाइमेट में यह जो तब्दीली आ रही है इस के कारण से ये दूसरे देशों बने हैं। पहले अपने क्षेत्रों को तो सँभालो। वहां तो तुम काम नहीं कर रहे।

जर्नलिस्ट ने प्रश्न किया कि , आपने यह कहा कि सबसे बड़ा ख़तरा जो आपको नज़र आ रहा है वह तीसरी जंग है।

इस प्रश्न के जवाब में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया सबसे बड़ा ख़तरा जो मैं देखता हूँ (मैं दुनियावी लीडर तो नहीं हूँ वह अल्लाह तआला से दूरी है और फिर उस की अल्लाह तआला सज़ा देता है। अल्लाह तआला नबियों को न मानने पर सज़ा नहीं देता। अल्लाह तआला ज़ुल्मों के बढ़ने पर सज़ा देता है । संसार में अत्याचार बढ़ रहे हैं। इस्लाम ख़त्म हो रहा है। मुस्लमानों की गर्दनें काट रहे हैं। आपने अभी स्वयं ही बताया। जो तरक़्क़ी वाले देश हैं कम तरक़्क़ी वाले देशों को develop नहीं होने देना चाहते। जो कौमें develop हो रही हैं उन के लिए कोई न कोई ऐसी restriction लगाने का प्रश्न उठाते रहते हैं। ये क्लाइमेटचेंज वाला प्रश्न हो गया। इस के ऊपर मीटिंगें होती रहती हैं। प्रश्न यह है कि क्लाइमेट चेंज का मामला तो पिछले दो decades से चल रहा है लेकिन यह शोर नहीं मच रहा कि कितने लोग मरे? उनके बमों और जंगों से कितने लोग मरे बल्कि लोग तो अब यह भी कहते हैं (पता नहीं कहाँ से यह ख़बर है सही है या ग़लत है)कि जो विभिन्न बीमारियां फैलती हैं उनका वाइरस भी स्वयं ही एक बार छोड़ते हैं ओर फिर उस के इलाज की दवाई से अपनी इंडस्ट्री को develop करते हैं। कभी Mad Cow का प्रश्न उठ जाता है कभी बर्ड फ़लू का प्रश्न उठ जाता है। अफ़्रीक़ा में जो इबोला फैली थी उस का प्रश्न उठ जाता है। तो बहरहाल इन्सान जब अपनी सीमाओं से बाहर निकलता है तो फिर अल्लाह तआला का क़ानूने क़ुदरत भी तो वहां काम करता है। अब देखें पहले आबादी की तुलना से, जंगल ज़्यादा थे। इस का प्रश्न उठाया जाता है। जहां अत्याचार होने शुरू हो जाएं और बिना कारण अल्लाह तआला के बैलेंस को भी ख़राब किया जाए तो फिर उस के जो नेचुरल परिणाम हैं वे भी तो प्रकट होने हैं। पाकिस्तान में ठीक है आबादी बढ़ रही है लेकिन में जो north का क्षेत्र है बल्कि रावलपिंडी से ऊपर चले जाएं तो सारा क्षेत्र एक ज़माना में बड़ा ग्रीन एरिया था और बड़ा घना forest था। इसी तरह स्वात के क्षेत्र में , कश्मीर के क्षेत्र में आगे नीलम वैली इत्यादि के क्षेत्र में और कुछ ऐसी जगहों पर जहां forest थे अच्छे घने इलाक़े होते थे। इस को लोगों और सियासतदानों ने काट काट के और अपने जंगल बीच बीच के लाभ उठा लिया है और नई प्लांटेशन नहीं की। तो जब तक यह प्लांटेशन नहीं होती उस समय जो नुक़्सान हुआ है वह तो पूरा नहीं हो सकता।

जर्नलिस्ट ने प्रश्न किया , आपने world leaders को भी पत्र लिखे और आपने लैक्चर भी दिए और किताब भी प्रकाशित की और जब आप देखते हैं कि संसार अमन की ओर नहीं जा रही है तो आप कभी मायूस भी होते हैं?

इस प्रश्न के जवाब में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया

एक शेअर हज़रत नवाब मुबारका बेगम साहिबा रज़ि ने कहा जो बड़ा अच्छा है

मायूस वग़ामज़दा कोई उस के सिवा नहीं
क़बज़े में जिसके क़बज़ा सैफ़े ख़ुदा नहीं

जिसको अल्लाह तआला पर यक़ीन हो वह मायूस नहीं हुआ करता। आयरलैंड में मुझे किसी अख़बार के जर्नलिस्ट ने यही प्रश्न किया था। मैंने कहा हम give up करने वाले नहीं हैं। हम तो लगे रहेंगे और प्रयास करते चले जाऐंगे। और एक दिन आएगा जब realize करेगी और ठीक हो जाएगी । यही उभरती हुई क़ौमों का तरीक़ा है और इसी तरह होता है। मायूस हो गए तो बैठ गए और ख़त्म हो गए। मैं मायूस हो गया तो आप लोग बिल्कुल ही मायूस हो जाऐंगे। बाक़ी रह गए पत्रों की बात। obama साहिब का जो डिपार्टमैंट है इस का एक political adviser मुझ से स्वयं मिला उसने कहा मैं इस से बात करूँगा मुझे हैरानी है कि अभी तक जवाब नहीं मिला। कुछ समय बाद उस का जवाब आया कि मुश्किल लग रहा है। इस के बाद फिर जवाब आया कि हमारे जो प्रमुख लोग थे वह सिर जोड़ के बैठे हैं और कहा है कि इस ख़त का जवाब देना बहुत मुश्किल है, इस लिए जवाब नहीं देना।

कैनेडा के प्राइम मिनिस्टर ने पहले छोटा सा जवाब मुझे दिया। इस का एक नायब था संयोग से मुझे मिला। इस से बात हुई तो कुछ दिन बाद फिर थोड़ा बेहतर जवाब आ गया कि हम यह कर रहे हैं। केवल डेविड कैमरोन ने मुझे एक जवाब सही दिया था कि आपने मुझे लिखा है और हम एटॉमिक पावर को कम करने की प्रयास कर रहे हैं और सारे जो G8 के देश हैं अब G7 रह गए हैं वह प्रयास कर रहे हैं कि इस को कम करें। रशिया को बाहर निकाल दिया और 2020 तक हमको आशा है कि हम अपनी न्यूक्लीयर पावर कम करते हुए तीसरे हिस्सा तक ले जाऐंगे और इसी तरह बाक़ी संसार भी कम करेगी। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला ने फ़रमाया,लेकिन इस वर्णन के बावजूद कुछ देश न्यूक्लीयर पावर में आगे बढ़ रहे हैं। इस्राईल के प्राइम मिनिस्टर को भी मैंने लिखा था लेकिन क्या परिणान हुआ? उसने दो दिन पहले threat किया और कहा है कि अमरीका ने जापान पर जो एटम-बम गिराया है इस को जस्टीफ़ाई उसने इस तरह किया कि यदि हम इस तरह न करते जिससे जो लाखों लोग मरे हैं तो जंग इस से ज़्यादा लंबी होती और ज़्यादा लोग मरते। इस लिए यदि हम भी जंग से रोकने के लिए ईरान पर एटम बम मारते हैं तो इस की भी justification हमारे पास है। साथ यह कह दिया कि हम मारेंगे नहीं लेकिन प्रश्न यह है कि उसने यह प्रश्न तो उठा दिया। अब incite किया है ईरान को। अब यदि ईरान के पास न्यूक्लियर पावर बनने का potential है तो क्या वह इस threat के बाद रुकेगा? वह तो करेगा फिर उस के बाद अमरीका कहेगा यह बात तो ये सारी बड़ी ताक़तें ईरान के विरुद्ध इकट्ठी हो जाएँगी। मैं एक पागल का उदाहरण दिया करता हूँ । एक पागल रब्वाह में होता था जो लोगों के विरुद्ध बोलता था। और यह बात करता था कि ये लोग जो बड़े ताक़तवर लोग हैं ये मुझे गिराते हैं और मारते हैं । मार-मार के मुझे ज़मीन पर गिरा देते हैं और मीरा गला दबाते हैं। जब मेरी आँखें बाहर निकलती हैं और सांस रुकता है तो कहते हैं ख़बीस आँखें निकालता है उसे और मारो। यह तो उनका हाल है। ये पहले मारते हैं फिर कहते हैं ये आँखें निकालता है और मारो। ये जो सारी पालिसीयां हैं , ये दज्जाली हैं।

(शेष.....)

पृष्ठ 1 का शेष

कि कभी भी दुनिया में ख़ुदा ने किसी का समर्थन नहीं किया। भाषा का इतना व्यापक होना और फिर इस में इतनी संख्या में पुस्तकों की रचना होना भी इस्लाम ही का समर्थन है; क्योंकि क़ुरआन शरीफ़ ही का समर्थन हुआ है। कोई शब्दकोष वाला जब किसी शब्द के अर्थ लिखता है तो यदि वह शब्द क़ुरआन मजीद में आया है तो साथ ही उसने वह आयत भी ज़रूर ही लिख दी है।"

यहां मौलाना अब्दुल करीम साहिब ने फ़रमाया कि "लिसानुल अरब ने तो यह तरीक़ा अनिवार्य रूप से रखा है।" फिर हज़रत ने अपने सिलसिला तक़रीर में फ़रमाया कि "संस्कृत इत्यादि भाषाएं तो लगभग क़रीब हो गई हैं। न उनमें रचनाएं हैं न कुछ और। ऐसा ही ईसाइयों की अवस्था है कि उनकी इंजील को मूल भाषा की तरफ़ ध्यान ही नहीं रहा।"

इस्लाम का पैदा किया रुहानी इन्क़िलाब

फिर इसी सिलसिला में हुज़ूर ने फ़रमाया:

"मुझे हैरत होती है कि फिर इस्लाम से क्यों द्वेष रखा जाता है। इस्लाम का ख़दा कोई बनावटी ख़ुदा नहीं, बल्कि वही क़ादिर ख़ुदा है जो हमेशा से चला आया है और फिर रिसालत की तरफ़ देखो कि मूल उद्देश्य रिसालत का क्या होता है।

प्रथम यह कि रसूल ज़रूरत के समय पर आए और फिर उस ज़रूरत को उत्तम रूप से पूरा करे। अत: यह गर्व भी हमारे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ही को प्राप्त है। अरब और दुनिया की हालत जब रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आए किसी से छुपी नहीं। बिल्कुल असभ्य लोग थे। खाने पीने के सिवा कुछ न जानते थे। न बन्दों के अधिकारों से परिचित, न अल्लाह के हुक़ूक़ से अवगत। अत: ख़ुदा तआला ने एक तरफ़ उनका नक़्शा खींच कर बतलाया कि يَأْكُلُونَ كَمَا تَأْكُلُ الْأَنْعَامُ (मुहम्मद:13) फिर पवित्र रसूल की शिक्षा ने ऐसा प्रभाव किया يَبِيتُونَ لِرَبِّهِمْ سُجَّدًا وَقِيَامًا (अलफ़ुर्कान:65) की अवस्था हो गई। अर्थात अपने रब की याद में रातें सिज्दे और क़ियाम में गुज़ार देते थे। अल्लाह! अल्लाह!! कितनी महानता है। रसूले अक़रम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के कारण से एक अतुलनीय इन्क़िलाब और महान परिवर्तन हो गया। हुक़ूक़ुल ईबाद और हुक़ूक़ अल्लाह दोनों को समानता की तकड़ी पर स्थापित कर दिया और मुर्दा खाने वाली और मुर्दा क़ौम को एक उच्च दर्जा की ज़िन्दा और पवित्र क़ौम बना दिया। दो ही खूबियां होती हैं। बौधिक अथवा व्यावहारिक। व्यावहारिक हालत की तो यह हालत है कि يَبِيتُونَ لِرَبِّهِمْ سُجَّدًا وَقِيَامًا (अल-फ़ुर्कान: 65) और बौधिक का यह हाल है कि इतनी अधिक रचनाओं का सिलसिला और भाषा के विस्तार की सेवा का सिलसिला जारी है कि इस का उदाहरण नहीं मिलता।

दूसरी तरफ़ जब ईसाइयों को देखता हूँ तो मुझे हैरान ही होना पड़ता है कि हवारियों ने ईसाई हो कर क्या तरक़्क़ी की। यहूदा इस्करोयूती जो यसू का ख़ज़ानची था। कभी कभी रुपए ले भी कर लिया करता था और तीस रुपए लेकर उस्ताद को पकड़वाना तो इस का स्पष्ट ही है। यसू की थैली में दो हज़ार रुपया रहा करते थे। एक तरफ़ तो उनकी यह हालत है इस के मुक़ाबला में रसूले अक़रम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यह हाल कि मृत्यु के समय पूछा कि क्या घर में कुछ है। जनाब आयशा सिद्दीक़ा रज़ी अल्लाह अन्हा ने फ़रमाया कि एक दीनार है। हुज़ूर ने फ़रमाया कि उसे बांट दो। क्या यह हो सकता है कि अल्लाह का रसूल ख़ूदा तआला की तरफ़ सफ़र करे और घर में एक दीनार छोड़ जाए।

मुझे तो हैरान ही होना पड़ता है कि ईसाई लोग फ़लसफ़ा फ़लसफ़ा पुकारते हैं। उनकी इलाहियात (अर्थात अल्लाह तआला के बारे में) की फ़िलोसफ़ी ख़ुदा जाने कहाँ गई। कफ़्फ़ारा ही को देखो। एक काल्पनिक जानवर की तरह है। कफ़्फ़ारा ने क्या बनाया। इल्मी तर्कों को छोड़ दिया जाए तो भी देखो कि हवारियों का न तो बौधिक सुधार हुआ और न व्यावहारिक। बौधिक सुधार के लिए तो ख़ुद इंजील ने फ़ैसला कर दिया कि वे मोटी अक़्ल वाले थे और कम समझ वाले और लालची थे और व्यावहारिक सुधार का नक्शा भी इंजील ही ने खींच कर दिखला दिया कि कोई लानतें भेजता है और कोई तीस रुपए पर पकड़वाता है और क्या कुछ गुनाह के प्रभाव। अन्धकार और अन्धेरा तो इस दुनिया ही में शुरू हो जाता है। जैसे फ़रमाया مَنْ كَانَ فِي هَٰذِهِ أَعْمَىٰ فَهُوَ فِي الْآخِرَةِ أَعْمَىٰ (बनी इस्राईल :73) अब यसू के शागिर्दों को देखो कि क्या उनकी अवस्था में तब्दीली हुई। गुनाह के दूर होने से तो एक किस्म की समझ और रोशनी पैदा होती है,परन्तु उनमें कहाँ। फिर कफ़्फ़ारा ने क्या बनाया।"

सितम्बर 1898 ई सफलता की बिशारत

सितम्बर की सुबह को नमाज़ फ़ज्र के बाद हज़रत अक़दस ने फ़रमाया कि

"अब मेरी हालत यहां तक पहुंच गई है कि यदि कोई ख़्वाब आता है तो मैं उसे अपनी ज़ात या नफ़्स से विशेष नहीं समझता बल्कि इस्लाम और अपनी जमाअत ही के बारे में समझता हूँ और मैं कसम खाकर कह सकता हूँ कि अपने नफ़्स का थोड़ा भी विचार नहीं होता। अत: रात मैंने देखा कि एक बड़ा प्याला शर्बत का पिया। इस की मिठास इतनी है कि मेरी तबीयत सहन नहीं करती। इस के बावजूद मैं उस को पीए जाता हूँ और मेरे दिल में यह विचार भी आता है कि मुझे पेशाब बहुत अधिक आता है। इतना मीठा और अधिक शर्बत मैं क्यों पी रहा हूँ। परन्तु इस पर भी मैं इस प्याले को पी गया। शर्बत से अभिप्राय सफलता होती है और यह इस्लाम और हमारी जमाअत की सफलता की बिशारत है।

असल बात यह है कि जितने व्यापक इन्सान के सम्बन्ध होते हैं उतना बड़ा सिल्सिला उसके ख़ाब का सम्बन्धों की तुलना में व्यापक होता जाता है। जैसे यदि कलकत्ता का कोई ऐसा व्यक्ति हो जिसको हम जानते भी नहीं तो उसके बारे में कोई ख़्वाब भी न आएगी; अत: कई साल पहले जब मुझे केवल कुछ आदमी जानते थे,उस वक़्त जो ख़्वाब आती थी वह उन तक ही सीमित होती थी और अब कई हज़ार से सम्बन्ध रखती है।

दवाइयों के बारे में वार्तालाप का सिल्सिला चल पड़ा और वह इस बात पर कि मौलाना मौलवी अब्दुल करीम साहिब को कोई दवा हज़रत अक़दस ने पिछली रात को दी थी। इसके प्रभाव के बारे में हज़रत ने पूछा। इसी अन्तर्गत में इस्टर्न सीरप और कुचला इत्यादि पर विभिन्न बातें होती रहीं और उनकी विशेषताओं में से पट्ठों की मज़बूती का वर्णन हुआ।

अरबी भाषा के कमाल

जिस पर हज़रत अक़दस को मौलाना मौलवी अब्दुल करीम साहिब ने इस बात की तरफ़ ध्यान दिला दिया कि असब के शब्द में फ़िलासफ़ी भरी हुई है। क्योंकि असब के अर्थ हैं बांधना और पट्ठे भी इन्सान के अंगों को रस्सियों की तरह बाँधे रखते हैं और इस के मुकाबला में नर्व (Nerve) शब्द में केवल शब्द के कुछ भी नहीं। इस पर हज़रत ने फ़रमाया

"यह भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का चमत्कार है कि शब्दों के अंदर इल्मी बातें भरी हुई हैं और अरबी भाषा इस लिए ख़ातिमुल्लिसान (सब भाषाओं से सर्वश्रेष्ठ) है। चूँकि क़ुरआन जैसा महान चमत्कार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को दिया गया, इस लिए उसकी महानता इल्मी पहलू से बहुत बड़ी है।"

फिर इसी के अन्तर्गत मिननुर्रहमान के प्रकाशन के बारे में वर्णन होता रहा। हज़रत ने फ़रमाया कि "कई माध्यमों और सामान के आपस में पहुंच जाने पर जो उसके लिए ज़रूरी हैं,प्रकाशित होगी।

अपनी सत्यता पर चार किस्म के निशान

फिर इसी वर्णन में आप ने फ़रमाया

"मैंने कई बार वर्णन किया है कि अल्लाह तआला ने चार प्रकार के निशान मुझे दिए हैं ओर जिनको मैंने बड़े दावे के साथ कई बार लिखा और प्रकाशित किया है।

प्रथम: अरबी जानने का निशान है। और यह उस वक़्त से मुझे मिला है,जब से कि मुहम्मद हुसैन (बटालवी साहिब) ने यह लिखा कि विनीत अरबी का एक सीग़ा (विभक्ति) भी नहीं जानता; हालाँकि हमने पहले कभी दावा भी नहीं किया था कि अरबी का सीग़ा आता है। जो लोग अरबी रचना और लेखनी में पड़े हैं वे इसकी कठिनाइयों का अंदाज़ा कर सकते हैं और उसकी ख़ूबियों को ध्यान में रख सकते हैं। मौलवी साहब (मौलवी अब्दुल करीम साहिब से अभिप्राय था) शुरू से देखते रहे हैं कि किस तरह पर अल्लाह तआला ने चमत्कारिक तौर पर मदद दी है। बड़ी मुश्किलें आकर पड़ती है। जब ठेठ भाषा का शब्द उचित अवसर पर नहीं मिलता, उस वक़्त अल्लाह तआला वे शब्द दिल में डालता है। नई और बनावटी भाषा बना लेना सरल है,परन्तु ठेठ भाषा कठिन है। फिर हमने इन रचनाओं को बहुत अधिक इनामों के साथ प्रकाशित किया है और कहा है कि तुम जिससे चाहो,मदद ले लो और चाहे भाषा जानने वालों को भी बुला लो। मुझे ख़ुदा तआला ने इस बात का विश्वास दिला दिया है कि वे हरगिज़ सामर्थवान नहीं हो सकते,क्योंकि यह निशान क़ुरआन करीम के चमत्कारों में से प्रतिरूप के रूप में मुझे दिया गया है।

द्वितीय। दुआओं का स्वीकार होना। मैंने अरबी रचनाओं के दौरान अनुभव करके देख लिया है कि कितनी प्रचुरता से मेरी दुआएं स्वीकार हुई हैं। एक-एक शब्द पर दुआ की है और मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को तो अलग करता हूँ। (क्योंकि उनके माध्यम और अनुसरण से तो ये सब कुछ मिला ही है)और मैं कह सकता हूँ कि मेरी दुआएं इतनी स्वीकार हुई हैं कि किसी की नहीं हुई होंगी।

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly **BADAR** Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 6 Thursday 18 February 2021 Issue No.7

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

मैं नहीं कह सकता दस हज़ार या दो लाख या कितने और कई क़बूलीयत निशान के तो ऐसे हैं कि एक संसार उनको जानता है।

तृतीय। निशान भविष्यवाणियों का है अर्थात भविष्य के प्रकट होने का। यूं तो नजूमी (सितारों का ज्ञान रखने वाले) और रुमाल(जन्त्र इत्यादि करने वाले) लोग भी अटकल बाज़ियों से कई बातें ऐसी कह देते हैं कि उनका कुछ न कुछ हिस्सा ठीक होता है और ऐसा ही इतिहास हमको बतलाता है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माना में भी काहिन लोग थे जो ग़ैब की ख़बरें बतलाते थे; अत: सतीह भी एक काहिन था,परन्तु उन अटकल बाज़ रुमालों और काहिनों का भविष्य जानना और अल्लाह के मामूर और मुलहम का भविष्य को प्रकट करना इस में यह अन्तर होता है कि मुलहम का भविष्य का प्रकट करना अपने अन्दर इलाही ताक़त और ख़ुदाई रौब रखता है; अत: क़ुरआन करीम ने स्पष्ट तौर पर फ़रमाया है कि فَلَا يُظْهِرُ عَلٰى غَيْبِهٖٓ اَحَدًا اِلَّا مَنِ ارْتَضٰى مِنْ رَّسُوْلٍ (अलजिन्न:27,28) यहां इज़हार का शब्द ही प्रकट करता है कि इसके अंदर एक शौकत और शक्ति होती है।

चौथा: निशान क़ुरआन करीम के गूढ़ रहस्य और मआरिफ़ का है, क्योंकि क़ुरआन के मआरिफ़ उस व्यक्ति के सिवा और किसी पर नहीं खुल सकते जिसकी पवित्रता हो चुकी हो।لَا يَمَسُّهٗٓ اِلَّا الْمُطَهَّرُوْنَ (अलवाकिया:80) मैंने कई बार कहा है कि मेरे विरोधी भी एक सूरत की तफ़सीर करें और मैं भी तफ़सीर करता हूँ। फिर मुक़ाबला कर लिया जाए,परन्तु किसी ने साहस नहीं किया। मुहम्मद हुसैन इत्यादि ने यह तो कह दिया कि उनको अरबी का सीग़ा (विभक्ति) नहीं आता और जब किताबें प्रस्तुत की गईं तो घटिया और कमज़ोर बहाने करके टाल दिया कि यह अरबी तो अरवी कचालू है ,परन्तु यह न हो सका कि एक पृष्ठ ही बना कर प्रस्तुत कर देता और दिखा देता कि अरबी यह है।

अत: ये चार निशान हैं जो विशेष रूप से पर मेरी सत्यता के लिए मुझे मिले हैं।

3 अक्तूबर 1898 ई एक रोया

3 अक्तूबर की सुबह को बाद नमाज़ फ़ज्र के बाद फ़रमाया: कि

रात को तहज्जुद के बाद लेट गया तो थोड़ी सी तन्द्रा के बाद देखा कि मेरे हाथ में "सुर्मा चश्म आर्या" के चार पृष्ठ हैं और कोई कहता है कि आर्या लोग अब ख़ुद इस किताब को छपवा रहे हैं।" ताबीर में फ़रमाया कि "शायद इससे यह अभिप्राय हो कि आर्या लोगों को जो कुछ पर्दे और शंकाएं हमारी भविष्यवाणियों जैसे लेखराम इत्यादि के बारे में के बारे में हैं। वे दूर हो जाएं। और उन पर असल हक़ीक़त प्रकट हो जाए। मुक़दमा क्लार्क में राम भजदत वकील आर्या था। जब अमृतसर के स्टेशन पर मुझ से मिला तो उसने साफ़ कहा कि मैं फ़ीस के बिना इस मुक़दमा में इसलिए गया था कि शायद लेखराम के क़त्ल का कोई सुराग़ मिले क्योंकि उसके क़त्ल का यक़ीन हमको आप पर था। ऐसा ही अन्य जातियों को ऐसा ख़्याल हो सकता है। अत: इस ख़्वाब से ऐसा मालूम होता है कि ख़ुदा तआला उन पर असल हक़ीक़त खोल कर हुज्जत मुल्ज़िमा (समझाने का अन्तिम प्रयत्न) सम्पूर्ण कर दे।" फिर फ़रमाया कि "पट्टी वाले जो इश्तिहार दिखाए गए थे इस में भी यही था कि वे लोग ख़ुद छपवा रहे हैं।"

भविष्यवाणी की महानता

इस पर मौलाना मौलवी नूरुद्दीन साहब रज़ि ने फ़रमाया कि जब वे बात पूरी

पृष्ठ 1 का शेष

कोशिश करती हैं परन्तु उसको क़ायम रखने के लिए कोशिश नहीं करतीं। अपने संयम का ख़्याल रखते हैं परन्तु औलाद के आचरण की ओर पूर्ण ध्यान नहीं देते। परिणाम यह होता है कि उनका नेकी का मयार गिरने लगता है यहाँ तक कि आख़िर में शब्द रह जाते हैं और वास्तविकता खत्म हो जाती है। और चूँकि यह बदलाव कई नसलों में होता है उसका एहसास भी पैदा नहीं होता और आख़िर क़ौम तबाही के गढ़े में गिर जाती है। अत: इस जुमला में इसी ओर तवज्जा दिलाई है कि अब हम देखेंगे कि तुम अपनी ख़िलाफ़त को कितनी देर तक क़ायम रखते हो।

यदि मुस्लमान इस बेमिसल नुक्ता का ख़्याल रखते तो आज उनका यह हाल नहीं होता। उन्होंने एक वक़्त अपनी औलादों की तर्बीयत के फ़र्ज़ से आलस्य किया और उनकी नाजायज़ मुहब्बत उन पर ग़ालिब आ गई या उन्होंने शादीयों में सावधानी से काम नहीं लिया और ऐसी औरतों को अपने घरों में लाए जो इस्लामी तर्बीयत की योग्यता नहीं रखती थीं और वह महान इमारत जो सहाबा रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के हाथों तैयार हुई थी अपनी बुनियादों पर गिर गई। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। यदिर आगे ही को वे क़ौम जिसे ख़ुदा तआला ने इस्लाम की तरक़्क़ी के लिए चुना है इस बात का ख़्याल रखे तो इंशाअल्लाह दुनिया में एक ज़बरदस्त बदलाव पैदा हो सकता है। रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने भी इस फ़र्ज़ की ओर इन शब्दों में इशारा फ़रमाया है كُلُّكُمْ رَاعٍ وَكُلُّكُمْ مَسْئُوْلٌ عَنْ رَّعِيَّتِهٖ- तुम में से हर एक व्यक्ति अपनी ज़ात के अतिरिक्त ज़िम्मेदारी के कुछ अन्य वजूदों का भी ज़िम्मेदार है और अल्लाह तआला इस से सिर्फ यही नहीं पूछेगा कि तुम ने क्या अमल किए बल्कि यह भी पूछेगा कि जिनकी ज़िम्मेदारी तुम्हारे सिर पर थी उन्हें तुमने किस काबिल बनाया। अत: ख़ाली अपने नफ़्स की पवित्रता इन्सान के काम नहीं आ सकती।

(तफ़सीरे कबीर, भाग 3 पृष्ठ 41से 42 प्रकाशन क़ादियान 2010)

☆ ☆ ☆ ☆

होगी। जितनी प्रमुखता तथा महानता हम को होगी दूसरे लोगों को कहाँ। हम तो देखते हैं कि कैसी कठिनाइयां सम्मुख हैं। हज़रत ने फ़रमाया। कि

"बेशक केवल इसी में नहीं बल्कि प्रत्येक दुआ और भविष्यवाणी की महानता और क़बूलीयत में यही हाल होता है। जैसे यदि किसी बंजर मैदान में जहां हज़ारों कोस तक पानी नहीं मिलता। कोई व्यक्ति दुआ करे और ख़ुदा तआला अपने फ़ज़ल से उसे पानी का प्याला प्रदान करे तो इस बात को संक्षिप्त रूप से इन कठिनाइयों और अन्य बातों को नज़रअंदाज करके वर्णन किया जाए तो लोग जो समस्त हालात पर अवगत नहीं, महानता के स्थान पर हंसी करेंगे परन्तु जब कठिनाइयों से परिचित हों तो फिर एक विशेष महानता और भय से इस को देखेंगे। ऐसा ही यदि कोई अनपढ़ मूर्ख आदमी अंग्रेज़ी की किताब पढ़ जाए तो इस की अनपढ़ता से परिचित लोग उसे महानता की दृष्टि से देखेंगे परन्तु एक एम.ए और बी.ए यदि इस किताब को पढ़ जाए तो क्या बात है, बिल्कुल महत्तव न देंगे ,मामूली बात ख़्याल करेंगे।

अत: प्रत्येक बात की महानता और महानता का न होना उसके प्राप्त करने की कठिनाइयों और साथ की बातों पर होता है।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 253 से 260 प्रकाशन 2008 क़ादियान)

☆ ☆ ☆ ☆

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अ: 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad